काला
द्वार

अंधकार का उदय भाग 1

सौम्या पंवार

BlueRoseONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Soumya Panwar 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-81-69956-55-0

Cover Design: Ajay Dhyani
Typesetting: Sagar

First Edition: July 2026

अनुक्रमणिका

कहानी: काली रात 1

शक्ति जागृत...7

शक्ति का शिखर, विनाश की शुरुआत..17

परशुराम का आगमन 26

शौर्य का उदय 31

काल तंत्रास्त्र और धर्मयोद्धा 38

काले चिन्ह का रहस्य...53

मां काली की मुक्ति और महायुद्ध 64

अंतिम युद्ध..71

तांत्रिक की वापसी...78

1

कहानी: काली रात

रात के ठीक 2 बज रहे थे। राजीव ऑफिस से अपने घर के लिए निकला। आज काम का बोझ कुछ ज़्यादा था, इसलिए देर हो गई थी। सिर भारी था, मन थका हुआ। उसने सोचा — "आज पैदल ही घर चलूँ... शायद मूड थोड़ा फ्रेश हो जाए।" वह चल पड़ा। उसके घर जाने के दो रास्ते थे — एक रास्ता जो शहर से होते हुए जाता था और दूसरा रास्ता जो जंगल की तरफ होकर जाता था। राजीव ने सोचा — "आज क्यों ना जंगल वाले रास्ते से जाऊं..." पर उसे यह नहीं पता था कि उस जंगल के भीतर एक पुराना शमशान है और आज हवा में भी एक अजीब सा एहसास था। राजीव अपने ऑफिस के काम को लेकर परेशान था और चलते-चलते उसी के बारे में सोच रहा था, उसे बिल्कुल अंदाज़ा नहीं था कि आगे क्या होने वाला है।

जंगल के भीतर एक तांत्रिक काली साधना कर रहा था। राजीव ने अचानक दूर एक हल्की सी रोशनी देखी और जिज्ञासा में वह उस रोशनी की तरफ बढ़ गया। जैसे ही वह पास पहुँचा उसने देखा — एक तांत्रिक मंत्रों का जाप कर रहा था, उसके चारों ओर कंकाल पड़े थे और वह एक रहस्यमयी घेरे के बीच बैठा हुआ था। तभी तांत्रिक ने एक पुरानी, काली किताब निकाली जिसके पन्ने पीले और फटे हुए थे, उसमें लिखा था — "कलयुग में एक समय ऐसा आएगा जब चाँद का सफेद रंग काला पड़ जाएगा, उस दिन की साधना काली शक्तियों को कई गुना बढ़ा देती है और एक 'काला द्वार' खोलती है, उस द्वार के खुलते ही

काली शक्तियाँ आज़ाद हो जाती हैं और जो उस द्वार को खोलता है वह उन्हें अपने वश में कर सकता है।" तांत्रिक का उद्देश्य साफ था, वह उन शक्तियों को पाना चाहता था ताकि सबको अपने वश में कर सके।

लेकिन राजीव यह सब सुन रहा था, वह चुपके से छिपकर पूरा दृश्य देख रहा था। जैसे ही तांत्रिक काला द्वार खोलने ही वाला था उसी समय राजीव की नज़र एक चीज़ पर पड़ी और वह डर गया, असल में वह सिर्फ एक चूहा था लेकिन डर के मारे राजीव का संतुलन बिगड़ गया और वह सीधे यज्ञ के बीच जा गिरा। अगले ही पल सब कुछ बदल गया, यज्ञ में विघ्न पड़ गया, धरती कांप उठी, हवा बहुत तेजी से चलने लगी, आसमान में बिजली कड़कने लगी मानो प्रकृति खुद चेतावनी दे रही हो। यह सब देखकर तांत्रिक घबरा गया लेकिन तब तक काला द्वार खुल चुका था। उस द्वार के भीतर से एक अत्यंत शक्तिशाली काली शक्ति ने राजीव को देख लिया और अगले ही पल वह शक्ति राजीव के शरीर में समा गई।

राजीव की आँखें धीरे-धीरे काली होने लगीं और उसके चेहरे पर डर का भाव आ गया। तांत्रिक डर के मारे पीछे हट गया क्योंकि जिस शक्ति को वह नियंत्रित करना चाहता था अब उसने एक नया शरीर पा लिया था, मानो वह शक्ति कब से राजीव का इंतज़ार कर रही थी। तांत्रिक हैरान रह गया और कहने लगा यह तो असंभव है... एक साधारण इंसान इन काली शक्तियों को कैसे नियंत्रित कर सकता है... तभी राजीव चीख पड़ा, वह चीख इतनी भयानक थी कि उसे सुनने वाला वहीं अपने होश खो दे, उसकी आवाज़ पूरे जंगल में गूंज उठी। कुछ पल बाद राजीव शांत हो गया और वह धीरे-धीरे उठकर वहां से चल पड़ा जैसे कुछ हुआ ही न हो मानो की उस का शरीर उस के बस न हो।

वह अपने घर की ओर चल पड़ा जैसे ही वह अपने घर पहुँचा उसने अपने घर के अंदर कदम रखा उसे अपने शरीर में कुछ अजीब सा महसूस हुआ, जैसे

उसका खून बहुत तेज़ी से बह रहा हो, उसकी नसें जैसे फटने को हों और उसके दिमाग में अजीब से विचार और हलचल हो रही है, उसकी धड़कनें किसी आम इंसान से कई गुना तेज़ हो चुकी थीं और उससे अपने भीतर एक असाधारण शक्ति का अहसास हो रहा था, लेकिन इससे पहले कि वह कुछ समझ पाता वह सीधे अपने बिस्तर पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया, जब उसकी आँख खुली तो दो दिन बीत चुके थे, उसके फोन पर कई मिस्ड कॉल्स थीं, ऑफिस वालों ने उसे बहुत बार कॉल किया था।

लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया, राजीव अनाथ था इसलिए उसे ढूंढने वाला भी कोई नहीं था, राजीव से ऑफिस में भी कोई बात नहीं करता था क्योंकि वो किसी छोटे शहर से था और वो वह अकेला ही रहता था, अब जैसे उसे धीरे-धीरे होश आया वो उठकर बाथरूम की तरफ गया और जैसे ही उसने शीशे में अपना चेहरा देखा वह डर गया, उसकी आँखें काली हो चुकी थीं, तभी अचानक उसे पिछली रात की सारी घटनाएँ याद आने लगीं —

तांत्रिक, यज्ञ, वो काला द्वार और भयानक शक्ति जिस ने उसके शरीर को काबू में कर दिया था, यह सब याद आते ही वह घबरा गया और बिना एक पल गंवाए भागता हुआ वापस उसी शमशान की ओर निकल पड़ा, जहां उसने आखिरी बार उस तांत्रिक को देखा था, जैसे ही वह शमशान में पहुंचा वह इधर-उधर तांत्रिक को ढूंढने लगा लेकिन वह कहीं नजर नहीं आया, राजीव जंगल के अंदर गया और तभी उसे एक छोटी सी गुफा दिखाई दी, उस गुफा के अंदर तांत्रिक ध्यान में लीन बैठा था, वह अपनी तांत्रिक शक्तियों से राजीव के बारे में जानने की कोशिश कर रहा था और उसे यह पता चल चुका था कि राजीव का जन्म एक अत्यंत दुर्लभ योग में हुआ था, जब सभी ग्रह एक ही सीध में थे, ऐसे समय में जन्म लेने वाला व्यक्ति साधारण नहीं होता उस में कई शक्तिया छुपी होती है, तभी राजीव वहां पहुंच गया और उसने जोर से आवाज़

लगाकर तांत्रिक का ध्यान भंग कर दिया और गुस्से में पूछा कि उसके साथ उस रात क्या हुआ था।

तांत्रिक ने धीरे से अपनी आँखें खोलीं और शांत स्वर और थोड़ा घबराए के कहा कि जिस समय तुम्हारा जन्म हुआ वह एक दुर्लभ योग था उस समय तुम्हारे जन्म के समय सभी ग्रह एक साथ थे और उसी वजह से तुमने उस काली शक्ति को अपने वश में कर लिया, यह सुनते ही राजीव के होठों पर एक मुस्कान आ गई और उसने पूछा कि क्या वह इन शक्तियों को पूरी तरह नियंत्रित कर सकता है।

तांत्रिक ने सिर झुकाकर कहा हाँ, लेकिन इसके लिए तुम्हें तंत्र विद्या सीखनी होगी, यह सुनकर राजीव ने बिना सोचे समझे कहा कि उसे यह विद्या सीखनी है, तब तांत्रिक ने उसे चेतावनी दी कि यह आसान नहीं है, एक छोटी सी गलती तुम्हें समय के ऐसे मायाजाल में फंसा सकती है। जहां से वापसी कभी नहीं होगी, तुम अकेले उस समय में अनंत काल तक भटक कर रहे जाओगे, कुछ पल सोचने के बाद राजीव ने कहा कि वह यह विद्या जरूर सीखेगा, तभी तांत्रिक ने अपने और राजीव के बीच एक रहस्यमयी घेरा बनाया और तंत्र शक्ति से उस घेरे में अग्नि प्रज्वलित की, घेरे के एक ओर तांत्रिक और दूसरी ओर राजीव बैठ गया और फिर शुरू हुई एक ऐसी साधना जो उसके जीवन को हमेशा के लिए बदलने वाली थी। जैसे ही तांत्रिक ने तंत्र विद्या का आरंभ किया राजीव अजीबो गरीब आवाज सुनाई देने लगी तभी तांत्रिक उसे कहता है कि तुम उन आवाज पर ध्यान मत दो वह तुम्हारा ध्यान भटकाने के लिए है अगर तुमने उन आवाजों पर ध्यान दिया तो तुम्हारी एकाग्रता टूट जाएगी और तुम समय के जाल में फंस कर रह जाओगे, तांत्रिक की बात सुनकर राजीव उन आवाजों पर ध्यान नहीं देता है और कहता है कि अब तुम तंत्र विद्या शुरू कर दो, फिर तांत्रिक उससे तंत्र विद्या के बारे में बताता है और कहता है।

तंत्र विद्या क्या है

तांत्रिक ने धीमी आवाज़ में समझाना शुरू किया कि तंत्र विद्या केवल शक्तियाँ प्राप्त करने का माध्यम नहीं है बल्कि इस में तुम खुद को और अपने अंदर की छुपी हुई शक्ति को पहचान सकते हो तंत्र विद्या तो आत्मिक मुक्ति का मार्ग है, जिस से तुम अहंकार और बंधनों से मुक्त हो जाते हो तंत्र शब्द संस्कृत के "तन" यानी फैलाना और "त्र" यानी मुक्ति से मिलकर बना है, इसका अर्थ है ऐसी विद्या जो आत्मा को बंधनों से मुक्त करे, तंत्र का आधार है शिव और शक्ति।

जहां शिव शुद्ध चेतना का प्रतीक हैं और शक्ति ऊर्जा का स्रोत है, तांत्रिक ने आगे कहा कि शिव बिना शक्ति और शक्ति बिना शिव दोनों ही अधूरे हैं, शिव शक्ति के बिना केवल शव मात्र है जब दोनों का संतुलन बनता है तभी सृष्टि और उसकी शक्तियों को समझा जा सकता है। फिर तांत्रिक राजीव को 10 महाविद्याएं के बारे में बताते हुए कहता है।

10 महाविद्याएं तंत्र विद्या का सबसे शक्तिशाली महाविद्याएँ हैं, ये आदि शक्ति के दस रूप हैं जो ब्रह्मांड की विभिन्न शक्तियों और मानव चेतना के अलग-अलग पहलुओं का दर्शाती है, महाविद्या का अर्थ होता है महान ज्ञान, इस से साधक को अपार शक्तियाँ, सुरक्षा, ज्ञान, धन, शत्रु विनाश और अंततः मोक्ष की प्राप्ति होती है, इससे मुख्य रूप से दो कुलों में बांटा गया है — काली कुल जो उग्र है और श्री कुल जो सौम्य और सात्विक स्वरूप का प्रतीक है, ये सभी रूप मिलकर सृष्टि के संतुलन को बनाए रखते हैं और साधक को उसके बाहरी संघर्षों पर विजय दिलाते हैं। तांत्रिक उसे इसकी उत्पत्ति के बारे में बताते हुए कहता है।

उत्पत्ति की कथा (देवीभागवत पुराण आदि के अनुसार) तांत्रिक ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा कि इन दस महाविद्याओं की उत्पत्ति एक अत्यंत रोचक

और शक्तिशाली कथा से जुड़ी है, जब माता सती अपने पिता दक्ष प्रजापति के यज्ञ में जाना चाहती थीं लेकिन भगवान शिव ने उन्हें मना कर दिया था। शिव के मना करने के बाद भी सती वहां गई फिर दक्ष ने शिव का अपमान किया, यह सुनकर सती क्रोधित हो गईं और उन्होंने अपना भयंकर रूप धारण कर लिया, सती ने दक्ष के यज्ञ में अपने शरीर का त्याग कर दिया लेकिन उनकी ये शक्तियाँ सदा के लिए ब्रह्मांड में विद्यमान रहीं, इस कथा से यह स्पष्ट होता है कि ये महाविद्याएँ इतनी शक्तिशाली हैं कि स्वयं शिव को भी रोक सकती हैं और यही कारण है कि तंत्र साधना में इनका अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। तांत्रिक अब उसे 10 महाविद्याओं की कथा सुनाते हैं और उन महाविद्याओं का अर्थ राजीव को बताता है। तांत्रिक राजीव को कहता है के में तुम्हें इन 10 महाविद्याओं की कथा के साथ तुम्हारी परीक्षा भी लूंगा अगर तुम उस परीक्षा में असफल होते हो तो मैं तुम्हारी परीक्षा को रोक दूंगा इस परीक्षा मैं तुम्हें अपना सारा ध्यान एक जगह केंद्रित करना होगा जिस वजह से तुम अपनी शक्तियों को जागृत और संतुलन कर सको।

2

शक्ति जागृत

तांत्रिक ने धीमे स्वर में राजीव से कहा कि अगर उसे अपनी शक्ति पर काबू पाना है तो सबसे पहले उसे उस की शक्तियों के बारे में समझना होगा, क्योंकि उसके भीतर जो ऊर्जा है वह साधारण नहीं बल्कि काली शक्ति का अंश है और तांत्रिक सब से पहले अपनी कथा की शुरुआत मां काली से होती है। इतना कहते ही तांत्रिक अग्नि के पास बैठकर मंत्रों का जाप शुरू करता और वातावरण अचानक बदलने लगता है चारों ओर अंधेरा छाता है। ऐसा लगने लगता है। जैसे रात और भी घनी हो गई हो। तांत्रिक ने राजीव को आँखें बंद करने को कहा और वह ध्यान में बैठ गया, शुरू में सब शांत था, लेकिन कुछ ही पलों बाद उसे अपने भीतर एक अजीब सी हलचल महसूस होने लगी, उसकी सांसें तेज हो गईं और उसे लगा जैसे उसके भीतर कोई प्राचीन और अत्यंत शक्तिशाली ऊर्जा जाग रही है।

अचानक उसके सामने एक भयानक स्वरूप उभरा—काला, विशाल, अनंत, बिखरे हुए बाल, गले में नरमुंडों की माला और हाथ में खड्ग लिए हुए, जिनकी आँखों में ऐसी ज्वाला थी कि राजीव का शरीर कांप उठा, डर के मारे उसकी आवाज़ निकलना मुश्किल हो गया और अगले ही पल वह चीख पड़ा, जिससे उसका ध्यान टूट गया और वह अचानक आँखें खोलकर बैठ गया, उसका शरीर पसीने से भीगा हुआ था और सांसें तेज चल रही थीं। तांत्रिक ने उसे शांत करते हुए कहा।

मां काली

जो उसने देखा वह मां काली का स्वरूप था और यह वही शक्ति है जो अब उसके भीतर है, लेकिन यदि वह इसे नियंत्रित नहीं कर पाया तो यही शक्ति उसे नष्ट भी कर सकती है। राजीव कुछ देर चुप रहा, लेकिन उसके चेहरे पर अब डर के साथ एक दृढ़ता भी दिखाई दे रही थी और उसने पूछा कि उसे क्या करना होगा। तांत्रिक ने उसे बताया कि केवल ध्यान से काम नहीं चलेगा, उसे अपने शरीर और मन दोनों को मजबूत बनाना होगा और इसके लिए उसे किसी बर्फीली जगह पर जाकर साधना करनी होगी, जहाँ वह कठिन परिस्थितियों में अपने मन को स्थिर रखना सीखे।

तांत्रिक की बात मानकर राजीव एक बर्फ से ढकी गुफा में पहुंचा और ध्यान में बैठ गया, लेकिन ठंड इतनी तीव्र थी कि उसका शरीर कांपने लगा और उसे लगा कि वह ज्यादा देर तक नहीं टिक पाएगा, उसकी उंगलियाँ सुन्न होने लगीं और सांसें टूटने लगीं, उसी समय उसे तांत्रिक की बात याद आई कि यदि शरीर को मजबूत करना है तो पहले मन को मजबूत करना होगा और उसने अपनी सांसों को नियंत्रित करते हुए अपने मन को शांत करना शुरू किया, उसने अपने भीतर उठती हर बेचैनी को रोकने के बजाय उसे समझना शुरू किया, धीरे-धीरे उसकी कंपकंपी कम होने लगी और ठंड का असर भी घटने लगा, मानो उसका शरीर अब उस बर्फीले वातावरण का हिस्सा बनता जा रहा हो। कुछ समय बाद उसने फिर से अपने भीतर वही ऊर्जा महसूस की, लेकिन इस बार वह उससे भागा नहीं बल्कि उसे स्वीकार किया, उसने अपनी चेतना को उस ऊर्जा के साथ जोड़ने की कोशिश की और धीरे-धीरे वह शक्ति उसके नियंत्रण में आने लगी, उसके भीतर उठता तूफान अब शांत होने लगा था, और जब उसने अपनी आँखें खोलीं तो उसके चेहरे पर डर की जगह एक गहरी शांति थी, लेकिन उसकी आँखों की गहराई में अब भी उस काली शक्ति की हल्की झलक मौजूद

थी, यह संकेत था कि उसकी यात्रा अभी शुरू हुई है… और असली परीक्षा अभी बाकी है।

जैसे ही राजीव ने अपने अंदर की ऊर्जा को नियंत्रित करना सीख लिया तो फिर तांत्रिक ने अब उसे

मां तारा

मां तारा जो कि 10 महाविद्याओं में दूसरी देवी है, उनका ध्यान करने को कहा जिससे उसका मन स्थिर रहेगा और जो उलझनें पहले उसे परेशान करती थीं, वे धीरे-धीरे खत्म होने लगेगी, अब राजीव की यात्रा एक नए चरण में प्रवेश कर चुकी थी, जहाँ पहले वह डर से जूझ रहा था, अब वह भ्रम और असमंजस से लड़ रहा था, शुरुआत में उसका मन बहुत भटकता था, विचारों की गति उसे स्थिर नहीं रहने देती थी, लेकिन जैसे-जैसे वह साधना करता गया, उसके भीतर एक अजीब सा ठहराव आने लगा, उसके विचारों में धीरे-धीरे स्पष्टता आने लगी, उसे समझ में आने लगा कि जीवन में क्या सही है और क्या गलत, जो फैसले पहले उसे असंभव लगते थे अब वे सरल लगने लगे, उसके अंदर एक गहरी समझ और विवेक विकसित होने लगा, माँ तारा की साधना ने उसके जीवन से अंधकार हटाकर उसे दिशा और स्पष्टता दी, अब वह केवल भावनाओं के आधार पर नहीं बल्कि समझ के साथ निर्णय लेने लगा, कुछ समय बाद उसे तीसरी साधना दी गई।

माँ त्रिपुरा सुंदरी

माँ त्रिपुरा सुंदरी की, यह चरण सबसे सूक्ष्म और गहरा था, अब उसकी यात्रा संघर्ष से निकलकर संतुलन की ओर बढ़ रही थी, साधना के दौरान उसे भीतर एक ऐसी शांति महसूस होने लगी जैसे उसने पहले कभी अनुभव नहीं की थी, उसका मन अब न तो डर से परेशान था और न ही भ्रम से उलझा हुआ था, वह

हर परिस्थिति में संतुलित रहने लगा, उसे हर चीज में एक अलग ही सुंदरता और गहराई दिखाई देने लगी, चाहे वह सुख हो या दुख, जीवन अब उसके लिए बोझ नहीं था बल्कि एक समझने योग्य अनुभव बन गया था, धीरे-धीरे उसे एहसास हुआ कि जो शक्ति वह बाहर खोज रहा था वह वास्तव में उसके अंदर ही थी, माँ काली ने उसके भीतर के डर और अहंकार को तोड़ा, माँ तारा ने उसे ज्ञान और स्पष्टता दी, और माँ त्रिपुरा सुंदरी ने उसे संतुलन और पूर्णता का अनुभव कराया।

इन तीनों चरणों के बाद उसकी कुंडलिनी शक्ति जागृत होने लगी, लेकिन यह कोई अचानक होने वाली घटना नहीं थी बल्कि एक गहरा आंतरिक परिवर्तन था, अब वह व्यक्ति वही नहीं रहा था जो पहले था, वह शांत, जागरूक और स्थिर चेतना में जीने लगा था, जहाँ उसे स्वयं के भीतर ही संपूर्ण ब्रह्मांड का अनुभव होने लगा, लेकिन इसके बावजूद उसकी शक्ति अभी अधूरी थी, वह उसे पूरी तरह नियंत्रित नहीं कर पा रहा था, वह ऊर्जा का उपयोग तो कर पा रहा था लेकिन उसका संतुलन अभी भी अस्थिर था, इसी वजह से तांत्रिक ने गंभीर स्वर में कहा कि अब अगला चरण और भी कठिन होगा, क्योंकि अब उसे केवल शक्ति नहीं बल्कि उसके नियंत्रण की पराकाष्ठा सीखनी होगी, और इसके लिए उसे तीन और महाविद्याओं—भुवनेश्वरी, भैरवी और छिन्नमस्ता की साधना करनी होगी, क्योंकि यही तीन शक्तियाँ उसे उसकी ऊर्जा पर पूर्ण नियंत्रण, संतुलन और विनाश-निर्माण के बीच सही संतुलन सिखाएंगी, और असली परीक्षा अब शुरू होने वाली थी…

तांत्रिक अब राजीव की असली परीक्षा शुरू करता है जिसमें वह उसे अपनी ऊर्जा पर संतुलन करना और उसका सही प्रयोग करना सिखाता है, राजीव बाकी महाविद्याओं के बारे में जानने और उनकी साधना करने के लिए और भी अधिक उत्साहित हो चुका था, वह इन महाविद्याओं को अपनी साधना में शामिल करके अपनी काली शक्तियों को कई गुना बढ़ाना चाहता था, तांत्रिक

उसे अपनी शक्तियों पर पूर्ण नियंत्रण पाने के लिए माँ भुवनेश्वरी, भैरवी और छिन्नमस्ता की साधना के बारे में बताता है और समझाता है कि कैसे इन तीनों की साधना से वह अपनी ऊर्जा को स्थिर, नियंत्रित और दिशा दे पाएगा, सर्वप्रथम तांत्रिक उसे माँ भुवनेश्वरी की कथा सुनाने लगता है और उनके गहरे अर्थ को समझाता है,

मां भुवनेश्वरी की कथा

वह कहता है कि माँ भुवनेश्वरी सृष्टि की मूल चेतना हैं, जब न पृथ्वी थी, न आकाश, न समय और न ही कोई जीव, तब केवल एक अनंत शून्य था और उसी शून्य से एक दिव्य चेतना प्रकट हुई जिसे भुवनेश्वरी कहा गया, "भुवन" यानी सम्पूर्ण जगत और "ईश्वरी" यानी वह शक्ति जो पूरे ब्रह्मांड को धारण करती है, कहा जाता है कि उन्होंने अपने संकल्प से सबसे पहले आकाश की रचना की क्योंकि बिना स्थान के कुछ भी संभव नहीं था और उसी आकाश में उन्होंने धीरे-धीरे पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और सभी लोकों का विस्तार किया, देवता, मानव, प्रकृति, समय और सभी जीव उनके ही स्वरूप से उत्पन्न हुए, तांत्रिक विद्या में यह भी माना जाता है कि यह सारा ब्रह्मांड माँ भुवनेश्वरी के शरीर का ही विस्तार है और जो कुछ भी हम बाहर देखते हैं वह उनके भीतर ही समाया हुआ है, वे केवल सृष्टि की रचयिता ही नहीं बल्कि उसे संतुलित और नियंत्रित रखने वाली शक्ति भी हैं, उनकी उपासना से साधक यह समझता है कि जैसे पूरा ब्रह्मांड एक विशाल आकाश में स्थित है वैसे ही उसके भीतर भी एक आंतरिक आकाश है जहाँ विचार, भावनाएँ और शक्तियाँ आती-जाती रहती हैं लेकिन जो उन्हें देख रहा है वह स्थिर और शांत रहता है, यही भुवनेश्वरी का वास्तविक स्वरूप और उनकी कथा का गहरा संदेश है।

यह कथा सुनाने के बाद तांत्रिक राजीव को उसकी परीक्षा के लिए श्मशान ले जाता है और गंभीर स्वर में कहता है कि आज तुम्हें पूरी रात यहाँ तुम्हें पहरा

देना है, आज तू अपनी शक्ति से मिलेगा, अगर संभाल पाया तो आगे बढ़ेगा नहीं तो यहीं रुक जाएगा, चारों तरफ घना अंधेरा था, हवा तेज चल रही थी और वातावरण में एक अजीब सा भय भरा हुआ था, राजीव के मन में विचार उठने लगे — "

मैं डर रहा हूँ...",

"यह जगह सही नहीं है...",

"मुझे यहाँ से चले जाना चाहिए...",

उसके भीतर डर का तूफान उठने लगा, तभी उसे लगा जैसे उसके चारों ओर छायाएँ घूम रही हैं, अजीब-अजीब आवाजें गूंज रही हैं और उसका दिल तेजी से धड़कने लगा, वह घबरा गया, जैसे ही उसने भागने का सोचा तभी उसे तांत्रिक की कही हुई भुवनेश्वरी की कथा याद आई, उसने खुद को रोका और भागने के बजाय वहीं खड़ा होकर अपने डर को देखने लगा, उसने पहली बार अपने डर से भागने के बजाय उसे समझने की कोशिश की, जैसे-जैसे वह अपने डर को स्वीकार करने लगा वैसे-वैसे उसके भीतर कुछ बदलने लगा, अचानक उसे एक दिव्य अनुभव हुआ, उसने देखा कि उसका शरीर जैसे गायब हो गया है और वह स्वयं एक विशाल आकाश बन गया है, उसके भीतर उठने वाले विचार, भावनाएँ और डर अब बादलों की तरह उस आकाश में आ-जा रहे थे लेकिन वह स्वयं शांत और स्थिर था, तभी उसके भीतर से एक आवाज गूंजी — "शक्ति को दबाना नहीं है, उसे बहने देना है, लेकिन तू उस बहाव में कभी मत बहना, तू उस शक्ति को तभी देख पाएगा, जब तू देखने वाला बन जाएगा तब हर शक्ति तेरे नियंत्रण में आ जाएगी", यह सुनते ही उसके भीतर एक गहरा परिवर्तन हुआ, जब राजीव ने अपनी आँखें खोलीं तो श्मशान वही था, अंधेरा वही था, लेकिन अब उसके मन में कोई डर नहीं था, वहाँ केवल शांति ही शांति थी, तांत्रिक दूर खड़ा मुस्कुरा रहा था और उसने कहा — आज तुमने

अपने डर पर काबू कर लिया है, यानी तुम ने अपने मन को स्थिर करना सीख लिया है, और यही असली शक्ति की पहली सीढ़ी है।

मां भैरवी की कथा

तंत्र शास्त्रों के अनुसार, जब सृष्टि में अधर्म और अराजकता बढ़ने लगी, तब देवी ने अपने उग्र और तेजस्वी रूप को प्रकट किया — यही रूप था मां भैरवी का, कहते हैं कि एक समय राक्षसों और नकारात्मक शक्तियों ने तीनों लोकों में भय फैला दिया था, देवता भी असहाय हो गए थे, तब आदिशक्ति ने अपने भीतर की अग्नि को प्रकट किया और उसी दिव्य अग्नि से मां भैरवी का उदय हुआ, उनका स्वरूप अत्यंत तेजस्वी था, उनके शरीर से अग्नि की लपटें निकल रही थीं, उनकी आंखें लाल और क्रोध से भरी हुई थीं, गले में मुंडों की माला थी और हाथों में त्रिशूल और खड्ग, उनके प्रकट होते ही चारों ओर कंपन होने लगा, मानो समय भी कुछ क्षणों के लिए ठहर गया हो, मां भैरवी ने युद्ध छेड़ दिया, लेकिन यह युद्ध केवल बाहरी राक्षसों से नहीं था बल्कि यह अज्ञान, भय, आलस्य और मोह के खिलाफ भी था, जहां-जहां उनकी दृष्टि पड़ी वहां अंधकार जलकर राख हो गया, उन्होंने सभी दुष्ट शक्तियों का अंत किया और फिर शांत होकर ध्यान में लीन हो गईं, उनकी कथा केवल विनाश की नहीं बल्कि परिवर्तन और शुद्धि की कथा है, यह सिखाती है कि भीतर की नकारात्मकता को समाप्त किए बिना सच्ची शक्ति प्राप्त नहीं होती।

इसी कथा के बाद तांत्रिक ने राजीव की अगली परीक्षा शुरू की, इस बार वह उसके भीतर छुपे क्रोध को बाहर लाना चाहता था, उसने जानबूझकर राजीव के अतीत के घावों को कुरेदना शुरू किया, वह उसे याद दिलाने लगा कि कैसे उसके माता-पिता के जाने के बाद लोगों ने उसे अस्वीकार कर दिया था, कैसे जब वह कमजोर पड़ता था तो लोग उसे नीचा दिखाते थे, कैसे उसने दूसरों के लिए काम किया लेकिन बदले में उसे सम्मान नहीं मिला, ये सारी बातें सुनकर

राजीव के भीतर दबा हुआ क्रोध धीरे-धीरे बाहर आने लगा, उसकी सांसें तेज हो गईं, उसने मुट्ठियाँ कस ली और उसकी आंखों में गुस्से की आग जलने लगी।

तांत्रिक लगातार उसे उकसाता रहा, उसके शब्द मानो उसकी आग में घी डालने का काम कर रहे थे, जितना वह बोलता गया उतना ही राजीव का क्रोध बढ़ता गया, अब वह अपने आप को खोने ही वाला था, उसका शरीर कांप रहा था और उसके भीतर की काली शक्ति भी इस क्रोध के साथ जागने लगी थी, लेकिन राजीव इन बातों को अपने मन से निकल ने का प्रयास करता है। उसे अपने भीतर कुछ महसूस होता है, उसने अपने मन को रोकने की कोशिश की, उसने अपने भीतर उठ रहे उस तूफान को देखा, पहली बार उसने अपने क्रोध को बाहर निकालने के बजाय उसे समझने की कोशिश की, उसने अपनी सांसों को नियंत्रित किया और धीरे-धीरे उस आग को शांत करने लगा, उसका चेहरा धीरे-धीरे शांत होने लगा और उसकी आंखों में जो क्रोध की अग्नि जल रही थी वो धीरे-धीरे शांत होने लगी। उसने अपने क्रोध को दबाया नहीं बल्कि उसे अपने नियंत्रण में लिया, यह देखकर तांत्रिक के चेहरे पर एक संतोष भरी मुस्कान आ गई, उसने कहा — "आज तुमने अपने क्रोध पर विजय प्राप्त की है, यही मां भैरवी की सच्ची साधना है, जब क्रोध तुम्हें नियंत्रित नहीं करता बल्कि तुम उसे नियंत्रित करते हो, तब वही क्रोध तुम्हारी सबसे बड़ी शक्ति बन जाता है, अगर तुम इसे सही दिशा में लगाओगे तो यही तुम्हें सफलता और आत्म-नियंत्रण के शिखर तक ले जाएगा।"

तांत्रिक अब राजीव को एक ऐसी महाविद्या के बारे में बताता है जिसमें माता ने स्वयं का बलिदान किया था, वह कहता है कि यह साधना केवल शक्ति पाने की नहीं बल्कि अपनी इच्छाओं, वासनाओं और अहंकार पर पूर्ण नियंत्रण पाने की साधना है, और यह कथा है माँ छिन्नमस्ता की।

मां छिन्नमस्ता कथा

तांत्रिक कथा शुरू करता है और कहता है कि एक बार माँ पार्वती अपनी दो सहेलियों डाकिनी और वारिणी के साथ स्नान के लिए गईं, स्नान के बाद उन दोनों को बहुत तेज भूख लगी और उन्होंने माँ से भोजन माँगा, माँ पार्वती ने चारों ओर देखा लेकिन वहाँ कुछ भी नहीं था, तब उन्होंने बिना एक पल सोचे अपना ही सिर काट दिया, जैसे ही उनका सिर अलग हुआ उनके शरीर से तीन धाराओं में रक्त बहने लगा, एक धारा उन्होंने स्वयं ग्रहण की और बाकी दो अपनी सहेलियों को दीं, इस प्रकार उन्होंने अपनी ही शक्ति से सबकी भूख शांत कर दी, यही स्वरूप आगे चलकर माँ छिन्नमस्ता के नाम से प्रसिद्ध हुआ,

तांत्रिक राजीव को समझाता है कि यह कथा त्याग, आत्म-नियंत्रण और सर्वोच्च बलिदान का प्रतीक है, सच्ची शक्ति वही है जो अपनी इच्छाओं पर विजय प्राप्त कर सके और आवश्यकता पड़ने पर स्वयं का त्याग कर सके।

इसके बाद तांत्रिक राजीव की सबसे कठिन परीक्षा शुरू करता है, वह उसे एक घने जंगल में ले जाता है जहाँ चारों ओर सन्नाटा था और केवल हवा की आवाज गूंज रही थी, तांत्रिक ने कहा कि आज की परीक्षा तेरी सबसे बड़ी परीक्षा है, अगर तू इसमें सफल

हुआ तभी तू अपनी असली शक्ति को छू पाएगा, उसने राजीव को एक छोटे से मंडल के भीतर बैठा दिया, चारों ओर धूप, धीमी अग्नि और मंत्रों की गूंज थी, कुछ ही समय में पहला चरण शुरू हुआ और राजीव को तेज भूख लगने लगी, उसके सामने अचानक स्वादिष्ट भोजन प्रकट हो गया जैसे कोई मायाजाल हो, उसका मन उसे उकसाने लगा कि खा ले कितना स्वादिष्ट भोजन है इससे तेरी भूख मिट जाएगी लेकिन उसे तांत्रिक की बात याद आई कि जो दिखाई दे वह सत्य नहीं होता, शक्ति वही है जो स्वयं पर नियंत्रण रखे, उसने अपनी आँखें बंद कीं और उस भोजन को अनदेखा कर दिया, इसके बाद

दूसरा चरण शुरू हुआ और चारों ओर का अंधेरा और गहरा हो गया, उसे महसूस हुआ जैसे कोई उसके पीछे खड़ा है, कभी हँसी की आवाज आती, कभी रोने की, कभी ऐसा लगता जैसे कोई उसे छू रहा हो, उसका दिल तेजी से धड़कने लगा और एक पल के लिए वह डर गया, लेकिन फिर उसने खुद को संभाला और अपने मन से कहा कि डर केवल एक भ्रम है, अगर वह इसे स्वीकार कर लेगा तो हार जाएगा, वह स्थिर बैठा रहा और धीरे-धीरे उसका डर समाप्त होने लगा,

फिर तीसरा और सबसे कठिन चरण शुरू हुआ, उसके सामने उसकी सबसे बड़ी इच्छा प्रकट हुई, वह चीज जिसे वह सबसे ज्यादा चाहता था, उसका मन पूरी तरह विचलित हो गया और उसे लगा कि अगर वह इसे पा ले तो वह सबसे शक्तिशाली बन सकता है, यही असली जाल था, उसी क्षण उसे माँ छिन्नमस्ता का स्वरूप याद आया जहाँ देवी स्वयं अपना सिर काट देती हैं, राजीव समझ गया कि सिर काटने का अर्थ है अपने अहंकार और इच्छाओं का अंत करना, उसने गहरी सांस ली और अपनी उस सबसे बड़ी इच्छा को त्याग दिया, जैसे ही उसने ऐसा किया चारों ओर का भ्रम टूट गया, अग्नि प्रज्वलित हो उठी और एक गहरी शांति उसके भीतर फैल गई,

तांत्रिक दूर खड़ा मुस्कुरा रहा था और उसने कहा कि अब तू समझ गया कि शक्ति बाहर नहीं बल्कि तेरे भीतर है, लेकिन उसे पाने के लिए तुझे पहले खुद पर विजय प्राप्त करनी होगी, इस पूरी परीक्षा का अर्थ यही था कि भूख शरीर की परीक्षा है, डर मन की परीक्षा है और इच्छा तथा अहंकार आत्मा की परीक्षा है, और जो इन तीनों पर विजय प्राप्त कर ले वही सच्चा साधक बनता है, माँ छिन्नमस्ता यही सिखाती हैं कि अगर

इंसान अपनी सबसे बड़ी इच्छा पर नियंत्रण पा ले तो वह अपने जीवन और अपनी शक्ति दोनों का सच्चा स्वामी बन जाता है। तांत्रिक कहता है की अभी तक तुमने अपनी शक्तियों को जागृत और नियंत्रण में रखना सीखा है। आगे की महाविद्याएं और भी कठिन है।

3

शक्ति का शिखर, विनाश की शुरुआत

तांत्रिक अब राजीव को ऐसी महाविद्या के बारे में बताता है जिसमें उसे आत्मबोध होता है, वह कहता है कि यह देवी शून्यता, त्याग और जीवन के कड़वे सत्य का प्रतीक है — माँ धूमावती, और उनकी साधना से इंसान अपने अकेलेपन, भय और निराशा से लड़ना सीखता है, तांत्रिक माँ धूमावती की कथा सुनाना शुरू करता है

मां धूमावती की कथा

तांत्रिक कहता है कि एक बार माँ पार्वती को बहुत तेज भूख लगी, उन्होंने भगवान शिव से भोजन माँगा लेकिन शिव ध्यान में लीन थे और उन्होंने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया, भूख इतनी बढ़ गई कि माँ पार्वती ने स्वयं ही शिव को निगल लिया, कुछ समय बाद उनके शरीर से धुआँ निकलने लगा और उसी धुएं के साथ शिव उनकी देह से बाहर प्रकट हुए, लेकिन उन्होंने पार्वती को श्राप दिया कि अब तुम विधवा रूप में रहोगी, उसी क्षण माँ धूमावती का प्रकट होना हुआ, एक वृद्धा के रूप में, फटे-पुराने वस्त्र, बिखरे बाल, बिना किसी आभूषण के, यह स्वरूप न तो सुंदर था और न ही आकर्षक, बल्कि यह जीवन की कठोर सच्चाई को दर्शाने वाला था, तांत्रिक राजीव को समझाते हुए कहता है कि माँ धूमावती शून्यता का प्रतीक हैं, वह अवस्था जब सब कुछ खत्म हो जाता है, जब न कोई सहारा होता है, न कोई उम्मीद बचती है, वही

क्षण असली ज्ञान की शुरुआत होती है, जब इंसान सब कुछ खो देता है तब वह मोह-माया से मुक्त होकर अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानता है, तांत्रिक धीमे स्वर में कहता है — "जब कुछ भी नहीं बचता, तब तुम खुद को पा लेते हो,"

इसके बाद वह राजीव की अगली परीक्षा शुरू करता है, इस बार उसे एक सुनसान और उजाड़ स्थान पर बैठा दिया जाता है जहाँ न कोई इंसान था न कोई आवाज, केवल सन्नाटा और अकेलापन, धीरे-धीरे यह अकेलापन राजीव के भीतर उतरने लगता है, उसके मन में अजीब-अजीब विचार आने लगते हैं, उसे लगता है जैसे सब कुछ खत्म हो गया है, वह खुद से सवाल करता है —

"मैं यहाँ क्यों हूँ?

इसका क्या मतलब है?"

अब उसकी असली परीक्षा शुरू हो चुकी थी, अकेलापन, डर और निराशा उसे चारों ओर से घेर लेते हैं, उसका मन कमजोर पड़ने लगता है, तभी राजीव अपनी आंखें बंद कर ध्यान में बैठ जाता है और अपने नकारात्मक विचारों को अपने मन से निकलता है। ध्यान में बैठकर उसे आत्मबोध होने लगता है। जब सब कुछ खत्म हो जाता है तभी इंसान मोह-माया से मुक्त होता है और आत्मबोध की शुरुआत होती है, और उस सन्नाटे में बैठकर ध्यान करने लगता है, धीरे-धीरे वह अपने भीतर झांकने लगता है, वह उस खालीपन से भागने के बजाय उसे स्वीकार करना शुरू करता है, उसके भीतर एक गहरी समझ जन्म लेती है — "मैं अकेला नहीं हूँ…

मैं खुद ही पूरा हूँ,"

उसी क्षण उसका डर समाप्त हो जाता है, उसका मन पूरी तरह शांत और स्थिर हो जाता है, अब वह अकेलापन उसे डराने के बजाय उसे मजबूत बना रहा था, तभी अचानक तांत्रिक उसके सामने प्रकट होता है और मुस्कुराता हुए कहता है कि जो खालीपन से भागता है वह हमेशा कमजोर रहता है, लेकिन जो उसे स्वीकार कर लेता है वही सच्चा शक्तिशाली बनता है, राजीव इस परीक्षा में सफल हो चुका था, उसने अपने भीतर के डर, निराशा और अकेलेपन पर विजय प्राप्त कर ली थी, लेकिन उसकी यात्रा अभी खत्म नहीं हुई थी, असली परीक्षा अभी भी बाकी थी और अब राजीव अगले चरण के लिए पूरी तरह तैयार था।

तांत्रिक अब राजीव के अगले चरण के लिए उसे माँ बगलामुखी की कथा सुनाता है और गंभीर स्वर में कहता है कि माँ बगलामुखी दस महाविद्याओं में "स्तंभन शक्ति" की देवी मानी जाती हैं, सरल शब्दों में वे वह शक्ति हैं जो दुश्मन की वाणी, बुद्धि और कर्म को रोक देती हैं, लेकिन उनका असली अर्थ इससे भी गहरा है, वे सिखाती हैं कि हर समस्या का हल लड़ाई नहीं होता बल्कि सही समय पर रोक देना ही सबसे बड़ी जीत होती है,

मां बगलामुखी की कथा

कथा के अनुसार एक समय भयंकर तूफान आया जिसने पूरी सृष्टि को हिला दिया, सब कुछ असंतुलित हो गया था, तब भगवान विष्णु ने तपस्या की और माँ बगलामुखी प्रकट हुईं, उन्होंने अपने तेज से उस तूफान को वहीं रोक दिया और सृष्टि को फिर से संतुलन में ला दिया, एक और स्वरूप में उन्हें एक दैत्य की जीभ पकड़कर रोकते हुए दिखाया जाता है, जिसका अर्थ है कि नकारात्मक शक्ति को उसी जगह रोक देना जहाँ वह जन्म लेती है, तांत्रिक राजीव को समझाते हुए कहता है कि अगर इंसान अपनी वाणी पर नियंत्रण कर ले तो वह अपने जीवन की आधी समस्याओं को बिना लड़े ही समाप्त कर सकता है,

इसके बाद तांत्रिक राजीव की परीक्षा शुरू करता है और अपनी माया से उसे एक कमरे में बैठा देता है जहाँ चारों ओर शोर है, लोग उसे उकसा रहे हैं, कोई उसे गालियाँ दे रहा है, कोई उसे गलत साबित करने की कोशिश कर रहा है, धीरे-धीरे राजीव का मन गुस्से से भरने लगता है, उसकी सांसें तेज हो जाती हैं और उसका चेहरा क्रोध से लाल हो जाता है, उसके सामने दो रास्ते होते हैं — या तो वह जवाब दे और अपने गुस्से को बाहर निकाल दे या फिर शांत रहकर उसे नियंत्रित करे, तांत्रिक पहले ही कह चुका होता है कि जो अपनी वाणी को रोक लेता है वही असली साधक है, तभी एक व्यक्ति आगे आता है और उसे अपमानित करता है, राजीव अपने गुस्से को शांत करके उसे व्यक्ति को देखकर मुस्कुराता है जो व्यक्ति उसे अपमानित कर रहा था वह राजीव को मुस्कुराता देखकर चुप हो जाता है। उसी क्षण अचानक सारा शोर बंद हो जाता है, कमरा पूरी तरह शांत हो जाता है,

तांत्रिक सामने खड़ा मुस्कुरा रहा होता है और कहता है कि तुमने बाहर के दुश्मन को नहीं बल्कि अपने अंदर के दुश्मन को रोक लिया है, वह आगे कहता है कि गुस्सा आना स्वाभाविक है लेकिन बोलना जरूरी नहीं, अपमान होना भी जीवन का हिस्सा है लेकिन हर बार प्रतिक्रिया देना जरूरी नहीं, विचार आएंगे लेकिन हर विचार सही नहीं होता, जो उन्हें रोक सकता है वही उन्हें नियंत्रित कर सकता है, यह सुनकर राजीव के भीतर एक नई समझ जन्म लेती है, लेकिन तभी तांत्रिक का स्वर गंभीर हो जाता है और वह उसे चेतावनी देता है कि यह मार्ग जितना दिखता है उतना आसान नहीं है, इन परीक्षाओं को पार करने के लिए वर्षों की साधना और अटूट धैर्य की आवश्यकता होती है, एक छोटी सी गलती भी अब तक की सारी साधना को नष्ट कर सकती है, यह सुनकर राजीव के मन में थोड़ी शंका और संकोच पैदा होता है, लेकिन तांत्रिक के शब्दों के पीछे एक और उद्देश्य था, वह उसे डराना नहीं बल्कि यह देखना

चाहता था कि अब तक की सभी परीक्षाओं से राजीव ने कितना सीखा है और क्या वह सच में अगले और भी कठिन चरण के लिए तैयार है।

तांत्रिक अब राजीव को अगले चरण के लिए तैयार करता है और कहता है कि अब बारी है माँ मातंगी की, जो ज्ञान, वाणी और कला की देवी मानी जाती हैं, जिन्हें तांत्रिक परंपरा में "तांत्रिक सरस्वती" भी कहा जाता है क्योंकि उनकी शक्ति शब्द, संगीत, अभिव्यक्ति और भीतर छिपे विचारों को बाहर लाने से जुड़ी होती है, तांत्रिक शांत स्वर में माँ मातंगी की कथा सुनाना शुरू करता है

मां मातंगी की कथा

तांत्रिक कहता है कि एक बार देवताओं के राजा इंद्र ने एक भव्य यज्ञ और भोज का आयोजन किया, सभी देवता, ऋषि और

दिव्य शक्तियाँ वहाँ उपस्थित थीं, यज्ञ समाप्त होने के बाद बहुत सारा उच्छिष्ट यानी जूठा अन्न बच गया, तभी वहाँ एक विचित्र रूप में एक स्त्री प्रकट हुई, उनके वस्त्र साधारण थे लेकिन उनके तेज में ऐसी गहराई थी कि नजर हटाना कठिन था, वे समाज के नियमों से अलग प्रतीत हो रही थीं, वही थीं माँ मातंगी, उन्होंने उस बचे हुए अन्न को स्वीकार किया और उसी से अपनी शक्ति प्रकट की, देवता पहले चौंक गए क्योंकि जूठा अन्न अशुद्ध माना जाता है, लेकिन धीरे-धीरे उन्हें समझ आया कि यह कोई साधारण रूप नहीं बल्कि एक गहरा संदेश है कि जिसे समाज अशुद्ध या निम्न मानता है उसमें भी दिव्यता और ज्ञान छिपा हो सकता है, तांत्रिक राजीव को समझाते हुए कहता है कि माँ मातंगी सिखाती हैं कि अपनी आवाज को पहचानना और उसे सही तरीके से व्यक्त करना ही सच्ची शक्ति है,

इसके बाद तांत्रिक राजीव की परीक्षा शुरू करता है और उसे एक ऐसे स्थान पर भेजता है जहाँ लोग उसे नीचा दिखाते हैं, उसकी बातों को नजर अंदाज

करते हैं और उसे अयोग्य समझते हैं, उसे बोलने का मौका तो मिलता है लेकिन डर और शर्म उसे रोकते हैं, उसके सामने दो रास्ते होते हैं — या तो वह चुप रहकर खुद को दबा दे या गुस्से में बिना सोचे कुछ भी बोल दे और असफल हो जाए, तीसरा रास्ता सबसे कठिन था कि वह अपनी बात को संतुलन और आत्मविश्वास के साथ रखे, अब उसके सामने सबके बीच उसे अपमानित किया जाता है, उसके शब्दों का मजाक उड़ाया जाता है और उसका मन टूटने लगता है, एक पल के लिए वह खुद पर शक करने लगता है, लेकिन फिर उसे अपनी अब तक की सारी साधनाएँ याद आती हैं, वह अपनी सांसों को नियंत्रित करता है और अपने भीतर की आवाज को सुनता है, इस बार वह न तो चुप रहता है और न ही गुस्से में बहता है, वह शांत होकर, स्पष्ट और सच्चे शब्दों में अपनी बात रखता है, उसके शब्दों में न क्रोध होता है न डर, केवल सच्चाई और आत्मविश्वास होता है, जैसे ही वह बोलना समाप्त करता है पूरा कमरा शांत हो जाता है, लोग पहली बार उसकी बात को ध्यान से सुनते हैं, तांत्रिक दूर खड़ा मुस्कुरा रहा होता है और कहता है कि आज तूने अपनी वाणी को पाया है और यही असली शक्ति है, वह आगे समझाता है कि अपनी आवाज को दबाना कमजोरी है और बिना सोचे बोलना भी कमजोरी है, लेकिन सही शब्दों को सही समय पर बोलना ही सच्ची शक्ति है, और अब राजीव उस शक्ति को समझने लगा था।

मां कमला की कथा

तांत्रिक अब राजीव को अंतिम महाविद्या की ओर ले जाता है और कहता है कि अब बारी है माँ कमला की, जो समृद्धि, सौंदर्य, संतुलन और पूर्णता का प्रतीक हैं, जिन्हें देवी लक्ष्मी का तांत्रिक रूप माना जाता है, लेकिन यहाँ धन का अर्थ केवल पैसा नहीं बल्कि जीवन की हर तरह की समृद्धि है—मन की शांति, रिश्तों की स्थिरता और आत्म-संतोष, तांत्रिक शांत स्वर में कथा शुरू

करता है और कहता है कि एक समय सृष्टि में असंतुलन फैल गया था, लालच, असंतोष और अशांति हर जगह बढ़ती जा रही थी, लोगों के पास सब कुछ होते हुए भी उनके मन में शांति नहीं थी, तब देवताओं ने भगवान विष्णु से प्रार्थना की कि संसार में समृद्धि तो है लेकिन संतुलन नहीं, तब विष्णु ने ध्यान किया और उनकी चेतना से एक दिव्य प्रकाश प्रकट हुआ, उसी प्रकाश से माँ कमला प्रकट हुईं, कमल के फूल पर विराजमान, चारों ओर स्वर्णिम आभा और उनके हाथों से निरंतर धन और अन्न की वर्षा हो रही थी, उनके प्रकट होते ही सूखी धरती हरी हो गई, जीवन में संतुलन लौट आया और सबसे महत्वपूर्ण बात—लोगों के मन में संतोष जागने लगा, तांत्रिक राजीव को समझाता है कि माँ कमला सिखाती हैं कि सच्ची समृद्धि केवल धन में नहीं बल्कि संतुलन, शांति और संतोष में होती है, जो भीतर से संतुलित होता है वही बाहर से समृद्धि को आकर्षित करता है, लालच से नहीं बल्कि संतुलन से धन आता है और जो है उसे स्वीकार करना ही आगे और पाने का मार्ग खोलता है,

इसके बाद तांत्रिक राजीव की अंतिम परीक्षा शुरू करता है और उसके सामने दो रास्ते रखता है, पहला रास्ता जहाँ तुरंत धन, शक्ति और सुख मिलता है और दूसरा जहाँ मेहनत, धैर्य और संतुलन है, पहला रास्ता आसान है लेकिन दूसरा कठिन और स्थायी, राजीव पहले आसान रास्ते की ओर बढ़ता है और उसे सब कुछ जल्दी मिलने लगता है, लेकिन कुछ ही समय में उसका मन अशांत हो जाता है, उसके भीतर डर और असुरक्षा बढ़ने लगती है और जो कुछ उसे मिलता है वह टिकता नहीं, उसे एहसास होता है कि यह सच्ची समृद्धि नहीं है, वह वापस लौटता है और इस बार कठिन लेकिन सही रास्ता चुनता है, धीरे-धीरे उसे स्थायी सफलता मिलने लगती है, उसका मन शांत रहने लगता है और उसका जीवन संतुलित हो जाता है, तांत्रिक मुस्कुराते हुए कहता है कि अब तूने समझ लिया कि समृद्धि सिर्फ पाने में नहीं बल्कि सही तरीके से पाने

में है, यही माँ कमला का संदेश है कि सच्ची समृद्धि वही है जो संतुलन और शांति के साथ मिले, इसके बाद तांत्रिक गंभीर हो जाता है और कहता है कि अब तुमने अपनी शक्तियों पर काफी हद तक नियंत्रण पा लिया है और दसों महाविद्याओं के गूढ़ अर्थ को समझ लिया है, तुमने मेरी हर परीक्षा पार की है,

लेकिन जब मैं तुम्हें यह सब सिखा रहा था तभी मुझे अपनी शक्तियों से एक आभास हुआ है कि देवताओं को यह पता चल चुका है कि काला द्वार खुल चुका है और इस संतुलन को रोकने के लिए उन्होंने धरती पर एक अवतार लिया है जो तुम्हारा अंत करेगा, यह सुनकर राजीव हल्का सा हँसता है और कहता है कि मेरा वध, यह संभव नहीं, लेकिन तांत्रिक उसे बीच में रोकते हुए कहता है कि अपने शत्रु को कभी हल्के में नहीं लेना चाहिए, अगर देवताओं ने अवतार लिया है तो वह साधारण नहीं होगा और तुम्हें सतर्क रहना होगा, यह सुनकर राजीव के भीतर एक नया अहंकार जागता है और वह कहता है कि तुम अपनी शक्तियों से उस बालक का पता लगाओ, मैं उसकी बलि देकर उसकी शक्ति को अपने अंदर समाहित कर लूंगा और फिर मुझे मृत्यु का भी भय नहीं रहेगा,

यह कहते ही राजीव कुछ गूढ़ मंत्रों का उच्चारण करता है और अपनी काली शक्ति से एक शक्तिशाली दंड प्रकट करता है और उसे तांत्रिक को देते हुए कहता है कि इसकी मदद से तुम उस बालक को ढूंढ पाओगे, तांत्रिक उसकी आज्ञा मानकर ध्यान में बैठता है और अपनी साधना से उस बालक की खोज शुरू करता है, कुछ समय बाद उसे आभास होता है कि एक दुर्लभ बालक ने महेंद्र पर्वत के पास जन्म लिया है, वह तुरंत यह बात राजीव को बताता है और साथ ही चेतावनी देता है कि उस पर्वत पर भगवान विष्णु के अवतार परशुराम तपस्या कर रहे हैं और अगर मैं वहाँ गया तो उन्हें सब पता चल जाएगा और मेरा अंत कर देंगे।

लेकिन राजीव अब पूरी तरह अपने अहंकार और शक्ति के प्रभाव में आ चुका था, उसने कठोर स्वर में कहा कि किसी भी हालत में उस बालक को मेरे पास लाना होगा, अगर तुम्हें और शक्ति चाहिए तो मैं तुम्हें दूंगा, यह कहते ही वह फिर से मंत्रों का उच्चारण करता है और तांत्रिक की शक्तियों को कई गुना बढ़ा देता है, अब तांत्रिक उस दंड को लेकर महेंद्र पर्वत की ओर बढ़ता है, जहाँ घने जंगलों और दिव्य ऊर्जा के बीच उसकी भेंट उस महायोद्धा से होने वाली थी… परशुराम से।

4

परशुराम का आगमन

महेंद्र पर्वत... जहाँ धरती और आकाश के बीच की रेखा मानो धुंधली पड़ जाती है, जहाँ हवा में एक अदृश्य शक्ति बहती है जहां का वातावरण सभी नकारात्मक ऊर्जा को नष्ट करती है। और हर पत्थर, हर वृक्ष किसी प्राचीन रहस्य का साक्षी लगता है। वहीं, घने जंगलों और ऊँचे पर्वतों के बीच, एक ऐसी तपस्या चल रही जिसने समय को भी जैसे थाम रखा था।

एक विशाल चट्टान पर, पूर्ण स्थिरता में बैठे, आँखें बंद, शरीर मानो पत्थर से भी कठोर उनके शरीर से निकलने वाला तेज उनके चारों ओर ऊर्जा का ऐसा प्रवाह था कि पास आने वाला हर जीव अनायास ही झुक जाता। उनके हाथ में रखा परशु केवल एक अस्त्र नहीं, बल्कि धर्म और विनाश का संतुलन था। वर्षों की तपस्या ने उन्हें केवल शक्तिशाली नहीं, बल्कि स्वयं प्रकृति का एक नियम बना दिया था।

अचानक...वहां की हवा में नकारात्मक ऊर्जा महसूस होने लगी वहां की हवा का रुख भी बदलने लगा। पहले जो हवा शांति थी, उसमें अब एक हल्की अशांति घुलने लगी। पेड़ों की पत्तियाँ बिना हवा के हिलने लगीं। दूर कहीं पक्षियों का झुंड अचानक उड़ गया, जैसे किसी अदृश्य खतरे को महसूस कर लिया हो। पर्वत की चोटी पर बैठे परशुराम उस नकारात्मक ऊर्जा को महसूस करने लगे उन्होंने धीरे से अपनी आँखें खोलीं।

उनकी दृष्टि सीधी आकाश की ओर उठी... और अगले ही पल, उन्हें आँखों बंद की और अपनी शक्तियों से उस नकारात्मक ऊर्जा का पता लगते हैं तभी उनकी आंखें खुलती है और।

"काला द्वार..." उन्होंने धीमे स्वर में कहा।

उनकी चेतना ने वह महसूस कर लिया था जिसे साधारण मन समझ भी नहीं सकता — एक ऐसी शक्ति जो सृष्टि के संतुलन को तोड़ने की क्षमता रखती थी, एक ऐसी ऊर्जा जो अगर अनियंत्रित हो गई तो सृष्टि को अंधकार में डुबो सकती थी।

उसी क्षण, उनके सामने एक सूक्ष्म दृश्य उभरा — एक युवक... जिसकी आँखों में काली शक्ति की झलक थी... और उसके आसपास विनाश की आहट।

तभी उनके मुख से एक नाम निकलता है राजीव।

परशुराम कुछ क्षण शांत रहे, जैसे उस दृश्य को परख रहे हों। फिर उन्होंने धीरे से अपना परशु उठाया और खड़े हो गए। जैसे ही वे उठे, उनके आसपास की धरती में हल्का कंपन हुआ जो प्रकृति अभी शांति थी मानो उनके उठने से भयभीत हो गई हो।

"जब शक्ति संतुलन से बाहर हो जाए... तो उसे रोकना ही धर्म है।"

उनकी आवाज़ में कोई क्रोध नहीं था... केवल एक अटल निर्णय।

हवा तेज हो गई और महेंद्र पर्वत... एक ऐसे संग्राम का साक्षी बनने जा रहा था... जहाँ केवल शक्तियों का नहीं, बल्कि धर्म और अधर्म का निर्णय होने वाला था।

तांत्रिक अब गुफा से निकलता है अपने हाथों में राजीव का दिया हुआ दंड महेंद्र पर्वत की ओर बढ़ने लगता है, लेकिन गुफा से बाहर कदम रखते ही उसके

मन में एक अजीब सा भय उत्पन्न होने लगता है, उसे बार-बार यही विचार सताने लगता है कि कहीं उसका सामना उस पर्वत पर तपस्या में लीन परशुराम से न हो जाए, क्योंकि यदि उन्हें उसकी उपस्थिति का आभास हो गया तो उनके क्रोध से उसे कोई नहीं बचा पाएगा, फिर भी वह अपने भय को दबाकर आगे बढ़ता रहता है।

क्योंकि उसके मन में राजीव का आदेश और उस बालक को लाने की बाध्य अधिक भारी थी, उधर दूसरी ओर राजीव अपनी गुफा में उस दिव्य बालक की बलि के लिए यज्ञ की तैयारी कर रहा होता है, वह मंत्रों का उच्चारण करते हुए यज्ञ कुंड में अग्नि प्रज्वलित करता है, अग्नि की लपटें धीरे-धीरे ऊँची उठने लगती हैं और वह यज्ञ के चारों ओर एक रहस्यमयी घेरा बना देता है, घेरे के प्रत्येक कोने पर वह कंकाल स्थापित करता है और स्वयं उस घेरे के मध्य बैठकर साधना में लीन हो जाता है।

उसकी आँखों में अब केवल शक्ति पाने की लालसा और अहंकार की चमक दिखाई दे रही थी और अपने मृत्यु के करण को आज समाप्त करने की लालसा भी उसमें थी ताकि उसकी शक्तियां छीन कर और भी अधिक शक्तिशाली बन जाए, इसी बीच तांत्रिक चुपके-चुपके महेंद्र पर्वत पर पहुँच जाता है जहाँ उसकी भेंट एक ऋषि और उनकी पत्नी से होती है, तांत्रिक की नजर तुरंत उस दिव्य बालक पर जाती है जो ऋषि की पत्नी की गोद में था, वह उसे छीनने के लिए आगे बढ़ता है तभी ऋषि उसे चेतावनी देते हुए कहते हैं कि तुम इस बालक को यहाँ से नहीं ले जा सकते, यह मेरा पुत्र है, मेरी वर्षों की साधना का फल है और यह धरती पर अधर्म के विनाश और धर्म की पुनः स्थापना के लिए जन्मा है।

यह सुनते ही तांत्रिक ठहा का लगाकर हंसने लगता है और व्यंग्य में कहता है “अधर्म का नाश… हाँ हाँ हाँ…”, अगले ही पल वह अपनी काली शक्तियों

से उस बालक पर प्रहार करता है, लेकिन ऋषि देवांशिर और उनकी पत्नी वेदांगी अपनी तपस्या की शक्ति से उस प्रहार को रोक लेते हैं और तांत्रिक का सामना करने लगते हैं, तांत्रिक अब अपनी काली शक्तियों से एक मायाजाल रचता है और उन्हें उसमें फंसा देता है, मायाजाल में फंसते ही दोनों भ्रमित हो जाते हैं और उन्हें प्रतीत होता है कि उनका बालक मर गया है, तभी उन्हें अपने बालक की ध्वनि सुनाई देती है और वह अपने वर्षों की तपस्या से तांत्रिक के उसे ब्रह्म को काट देते है।

यह देखकर तांत्रिक फिर से हंसता है और कहता है कि यह तो उसकी शक्ति का केवल एक छोटा सा प्रदर्शन था, अभी उन्होंने उसकी असली शक्ति देखी ही नहीं है, इतना कहते ही वह मंत्रों का उच्चारण करता है और अग्नि का भयंकर प्रहार उनकी ओर करता है, लेकिन ऋषि भी मंत्रों का उच्चारण कर उस प्रहार को निष्फल कर देते हैं, अब तांत्रिक अपना आपा खो बैठता है और राजीव का दिया हुआ दंड निकालकर उन पर प्रहार करता है।

इस बार ऋषि उस वार से स्वयं को बचा नहीं पाते और घायल होकर गिर जाते हैं, जैसे ही तांत्रिक उस बालक की ओर बढ़ता है तभी अचानक एक आवाज गूंजती है आवाज पूरे वातावरण में फैल जाती है — "ठहर जाओ… अगर तुमने उस बालक को क्षति पहुंचाई तो मैं तुम्हारा वध कर दूंगा", तांत्रिक तुरंत समझ जाता है कि यह आवाज किसकी है और वह सहम कर पीछे हट जाता है, अगले ही क्षण वहाँ परशुराम प्रकट होते हैं, उनकी उपस्थिति मात्र से ही वातावरण का कंपन बदल जाता है, ऋषि और उनकी पत्नी उन्हें प्रणाम करते हैं और सारी बात बताते हैं।

यह सुनते ही परशुराम का क्रोध प्रज्वलित हो उठता है, वे तांत्रिक की ओर देखते हुए कहते हैं कि उनके रहते हुए वह इस बालक को यहाँ से नहीं ले जा सकता, यह कोई साधारण बालक नहीं बल्कि देवों के देव महादेव का

आशीर्वाद है और आगे चलकर यह धर्म की रक्षा करेगा, फिर वे गंभीर स्वर में कहते हैं कि उन्हें उस काले द्वार के बारे में भी पता है जिसे खोलने का प्रयास किया गया था और यह भी कि उसकी शक्ति अब किसी और के वश में है जिसने उसे यहाँ भेजा है, यह सुनकर तांत्रिक भी पीछे हटने को तैयार नहीं होता और कहता है कि वह इस बालक को हर हाल में लेकर जाएगा चाहे उसे उनसे युद्ध ही क्यों न करना पड़े।

यह सुनते ही परशुराम का क्रोध चरम पर पहुँच जाता है, वे अपना परशु उठाते हैं और तांत्रिक की ओर बढ़ते हैं, तांत्रिक भी राजीव का दिया हुआ दंड लेकर उनके सामने खड़ा हो जाता है, अगले ही क्षण दोनों के बीच भयंकर युद्ध शुरू हो जाता है, परशुराम के एक ही प्रचंड वार से तांत्रिक पीछे जा गिरता है और उसके चेहरे पर भय स्पष्ट दिखाई देने लगता है, परशुराम अपना परशु उसकी ओर फेंकते हैं, तांत्रिक अपने दंड से उसे रोकने की कोशिश करता है लेकिन वह दंड पल भर में ही बीच से टूट जाता है मानो वह कांच का बना हो, तांत्रिक गंभीर रूप से घायल हो जाता है और अपनी जान बचाकर वहाँ से भाग निकलता है।

किसी तरह वह वापस गुफा में पहुँचता है जहाँ राजीव यज्ञ में लीन था, उसकी अवस्था देखकर राजीव क्रोधित हो उठता है और उससे पूछता है कि उसकी यह दशा किसने की और दंड का क्या हुआ और वह बालक कहाँ है।

तांत्रिक काँपती आवाज में सारी घटना बताता है कि कैसे वह बालक को लाने में असफल रहा और कैसे परशुराम ने उस पर प्रहार कर दंड को नष्ट कर दिया, यह सुनते ही राजीव का क्रोध भड़क उठता है और वह तुरंत महेंद्र पर्वत की ओर जाने को तैयार हो जाता है, लेकिन तभी तांत्रिक उसे रोकते हुए कहता है कि अभी वहाँ जाना मूर्खता होगी, उन्हें सोच-समझकर अगला कदम उठाना होगा क्योंकि अब उनका सामना किसी साधारण शक्ति से नहीं बल्कि स्वयं धर्म के रक्षक से होने वाला है।

5
शौर्य का उदय

महेंद्र पर्वत की शांत वादियों में उस दिन एक अलग ही दिव्यता थी। आसमान बिल्कुल साफ था, ठंडी हवाएँ पर्वतों से टकराकर धीरे-धीरे बह रही थीं और दूर बहते झरनों की ध्वनि सुनाई दे रही थी जो की वातावरण को और भी पवित्र बना रही थी। ऋषि देवांशिर और उनकी पत्नी वेदांगी अपनी कुटिया के बाहर खड़े थे। उनकी गोद में उनका बालक था जिसकी रक्षा के लिए स्वयं परशुराम थे। परशुराम बालक को कुछ क्षणों तक ध्यान से देखते रहे। उनकी आँखों में गंभीरता थी, लेकिन उस गंभीरता के भीतर एक अद्भुत शांति भी छिपी हुई थी। उन्होंने धीरे से कहा, "यह बालक साधारण नहीं है। इसकी आत्मा में दिव्य तेज दिखाई देता है। स्वयं महादेव की कृपा इसके साथ है और जिस के साथ महादेव का आशीर्वाद होता है उस को कोई भी हानि नहीं पहुंचा सकता। इसका जन्म केवल धर्म की रक्षा के लिए हुआ है।

ऋषि देवांशिर ने विनम्र स्वर में कहा, "भगवन... मैं और मेरी पत्नी द्वारा किए गए वर्षों की तपस्या के फल स्वरुप में महादेव ने दिया है। ऋषि देवांशिर कहते हैं कि भगवन आप ही इसका नामकरण करें।

कुछ पल तक भगवान परशुराम सोचते हैं। फिर परशुराम उस बालक के मस्तक पर हाथ रखा और बोले, "जो बालक धर्म की रक्षा के लिए जन्मा हो... और

जिसमें साहस स्वयं उसकी आत्मा का हिस्सा हो... उसका नाम होगा — शौर्य।

शौर्य...

यह नाम सुनते ही वेदांगी की आँखों से आँसू बह निकले। ऋषि देवांशिर ने अपने पुत्र को सीने से लगा लिया। उसी क्षण पर्वतों के ऊपर से तेज हवा गुजरी, जैसे प्रकृति ने भी उस नाम को स्वीकार कर लिया हो।

समय बीतने लगा।

शौर्य धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। बचपन से ही उसके भीतर कुछ अलग था। वह अन्य बच्चों की तरह चंचल नहीं था। उसकी आँखों में हमेशा एक गहरी जिज्ञासा दिखाई देती। कभी वह घंटों नदी किनारे बैठकर बहते जल को देखता रहता, कभी जंगल के बीच ध्यान में बैठ जाता। कई बार ऐसा होता कि जंगली पशु उसके पास आकर शांत हो जाते। मानो वे भी उसकी आत्मा की ऊर्जा को पहचानते हों।

एक दिन ऋषि देवांशिर ने देखा कि छोटा शौर्य लकड़ी की तलवार से अकेले अभ्यास कर रहा है। उसकी गति सामान्य बालकों जैसी नहीं थी। उसके हर वार में एक स्वाभाविक संतुलन था। तभी पीछे खड़े परशुराम मुस्कुराए और बोले, “समय आ गया है। अब इसे शिक्षा दी जानी चाहिए।”

अब शौर्य को परशुराम के आश्रम में ले जाया गया। महेंद्र पर्वत के बीचों बीच स्थित वह आश्रम साधारण नहीं था। वहाँ केवल अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा नहीं दी जाती थी, बल्कि धर्म और ज्ञान की शिक्षा भी दिया जाता।

शौर्य की शिक्षा आरंभ हुई।

उसका पहला दिन अत्यंत कठिन था। सूर्योदय से पहले उठना, घंटों ध्यान करना, पर्वतों पर दौड़ना, भारी शिलाओं को उठाना, तलवार और धनुष का

अभ्यास… शरीर पूरी तरह थक जाता। लेकिन शौर्य ने कभी हार नहीं मानी। हर दिन वह स्वयं को पहले से अधिक मजबूत बनाता गया। एक दिन अभ्यास के दौरान परशुराम ने उससे पूछा, “शौर्य… सबसे बड़ा योद्धा कौन होता है?”

शौर्य ने तुरंत उत्तर दिया, “जो सबसे शक्तिशाली हो।”

परशुराम ने सिर हिलाया, “नहीं। सबसे बड़ा योद्धा वह है… जो अपनी शक्ति पर नियंत्रण रखे। परशुराम कहते है क्रोध में हर कोई अस्त्र उठा सकता है… लेकिन धर्म के लिए सही समय पर अस्त्र उठाना ही सच्चा पराक्रम है।”

यह शब्द शौर्य के मन में गहराई तक उतर गए।

समय के साथ वह हर अस्त्र में निपुण होने लगा। धनुष चलाने में उसकी दृष्टि इतनी तेज हो गई कि वह दूर उड़ते पक्षी के पंखों को बिना घायल किए लक्ष्य भेद सकता था। भाले के प्रयोग में उसकी गति बिजली जैसी थी। लेकिन उसका सबसे प्रिय अस्त्र बना — तलवार। जब वह तलवार चलाता, तो उसकी गति इतनी तीव्र होती कि केवल चमक दिखाई देती। परशुराम भी समझ चुके थे कि शौर्य धर्म की रक्षा करने के लिए तैयार हो गया है।

संसार अंधकार में डूबता जा रहा था।

राजीव अब पहले वाला इंसान नहीं रहा था। उसकी आत्मा पर काली शक्तियों का प्रभाव लगातार बढ़ रहा था। उसकी आँखें अब पूरी तरह काली हो चुकी थीं। उसकी उपस्थिति मात्र से आसपास के वातावरण नकारात्मकता फैलने लग जाते।

उसने अपनी शक्तियों का प्रयोग करके सूर्य की किरणों को पृथ्वी तक पहुँचने से रोकना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे धरती पर अंधकार फैलने लगा। खेत सूखने लगे। लोग भय में जीने लगे। रातें लंबी होने लगीं। हर जवाब भय था लोग डर-डर के जीने लगे थे।

राजीव अपनी गुफा के भीतर बैठकर यह सब देखता और मुस्कुराता।

"जितना अधिक अंधकार फैलेगा…

उतनी ही मेरी शक्ति बढ़ेगी…"

उसने अपनी काली शक्तियों से एक विशाल सेना तैयार कर ली थी। वे साधारण सैनिक नहीं थे। कुछ काली ऊर्जा से बने जीव थे, कुछ ऐसे मनुष्य जो लालच और भय में आकर उसके अधीन हो चुके थे। वे गाँवों शहर पर हमला करते, लोगों में आतंक फैलाते और अधर्म को बढ़ाते।

तांत्रिक यह सब देखकर प्रसन्न था। उसने राजीव से कहा, "अब समय आ गया है कि तुम माँ काली की साधना प्रारंभ करो। अगर उनका आशीर्वाद तुम्हारे साथ हो गया… तो तुम्हारी शक्ति की कोई सीमा नहीं रहेगी।"

राजीव तुरंत तैयार हो गया।

लेकिन तांत्रिक ने उसे रोकते हुए कहा, "यह साधना केवल शक्ति प्राप्त करने के लिए नहीं है। इसमें तुम्हें अपने भीतर के भय और अहंकार का त्याग करना होगा। अगर तुम्हारा मन डगमगाया… तो यह शक्ति तुम्हें ही निगल जाएगी।"

राजीव ने बिना कुछ कहे अपनी साधना आरंभ कर दी।

उसने अपने चारों ओर अग्नि का एक विशाल घेरा बनाया और उसके भीतर बैठ गया। तांत्रिक गुफा के बाहर पहरा देने लगा। धीरे-धीरे गुफा के भीतर की ऊर्जा बदलने लगी। कभी वहाँ भयानक चीखें गूंजतीं, कभी अचानक सब शांत हो जाता। कई बार ऐसा लगता मानो स्वयं अंधकार जीवित होकर गुफा में घूम रहा हो।

दिन बीते…

महीने बीते…

फिर वर्ष बीत गए।

राजीव ध्यान में लीन रहा।

उधर शौर्य भी अब युवा हो चुका था। उसकी आँखों में आत्मविश्वास और चेतना का तेज दिखाई देता है। अब परशुराम उसे केवल युद्ध नहीं, बल्कि दिव्य अस्त्रों का ज्ञान भी देने लगे थे।

एक दिन परशुराम उसे पर्वत की चोटी पर ले गए और बोले, "हर अस्त्र की शक्ति उसके धारक के मन पर निर्भर करती है। अगर मन शुद्ध हो… तो साधारण अस्त्र भी दिव्यास्त्र बन जाता है अगर मन में थोड़ा भी अशुद्धता और मन पूर्ण तरह से संतुलन नहीं होता है तो तुम्हारा अस्त्र हर वार उतना ताकतवर नहीं होगा। लेकिन अगर मन अधर्म से भर जाए… तो सबसे दिव्य शक्ति भी विनाश बन जाती है।"

शौर्य ने पूछा, "क्या संसार में ऐसा कोई है… जो इतनी बड़ी शक्ति प्राप्त कर चुका हो?"

कुछ क्षणों तक परशुराम मौन रहे।

फिर उन्होंने धीरे से कहा —

"हाँ… और वही इस समय संसार के लिए सबसे बड़ा खतरा है।

उसी रात…

राजीव की साधना पूर्ण हुई।

पूरी गुफा भयानक ऊर्जा से कांप उठी। अग्नि का तेज और बढ़ गया। गुफा की दीवारों पर विचित्र छायाएँ बनने लगीं। तभी मां काली प्रकट हुई उनका स्वर गूंजा —

"वर मांगो… साधक…"

राजीव ने अपने नेत्र खोले।

उसके सामने माँ काली का विराट स्वरूप था। उनकी आँखों में अग्नि थी। गले में नरमुंडों की माला और हाथों में रक्त से सने अस्त्र।

राजीव मुस्कुराया।

“माता… आप अपना वास मेरी इस गुफा में करें… ताकि मेरी शक्तियाँ सदैव बढ़ती रहें…इस प्रकार से राजीव ने मां काली को अपने बंधन में बांध दिया”

कुछ क्षणों तक मां काली मौन रही।

फिर माँ काली का स्वर गूंजा —

“तथास्तु…”

लेकिन अगले ही पल उनका स्वर गंभीर हो गया।

“जिस दिन मैं तुम्हारे बंधन से मुक्त हो जाऊँगी…

उसी दिन तुम्हारी मृत्यु निकट होगी…”

राजीव कुछ क्षण शांत रहा…

फिर अचानक हँस पड़ा।

“मेरी मृत्यु…?

अब मृत्यु भी मुझसे डरेगी…”

उसका अहंकार अब उसकी शक्ति से भी बड़ा हो चुका था। तभी उसने अपनी सारी काली ऊर्जा को एकत्रित किया। गुफा के भीतर काला द्वार फिर से खुलने लगा। उस द्वार से निकलती ऊर्जा इतनी भयानक थी कि आसपास की चट्टानें टूटने लगीं। मंत्रों के बीच राजीव ने एक नया अस्त्र बनाना शुरू किया।

धीरे-धीरे एक काला दंड आकार लेने लगा…

जिससे अजीब ऊर्जा निकल रही थी।

और फिर…

काल तंत्रास्त्र का जन्म हुआ।

जैसे ही वह अस्त्र पूर्ण हुआ…

पूरा आकाश काला पड़ गया।

उसी क्षण…

महेंद्र पर्वत पर ध्यान में बैठे परशुराम ने अपनी आँखें खोल दीं।

उन्होंने दूर क्षितिज की ओर देखा।

फिर धीमे स्वर में बोले —

"अंधकार ने अपना सबसे भयानक अस्त्र बना लिया है…"पास खड़ा शौर्य उनकी ओर देखने लगा। परशुराम ने पहली बार उसकी तलवार की ओर देखा…जिससे हल्की दिव्य आभा निकल रही थी।

और उसी क्षण…

दूर आकाश में बिजली कड़की।

मानो स्वयं प्रकृति आने वाले महायुद्ध की घोषणा कर रही हो। राजीव ने अब एक ऐसा अस्त्र बना लिया था जिससे वह अपनी काली सेना और अपनी काली शक्तियों को बड़ा सके। अगर राजीव इस अस्त्र को बना के पूरे ब्रह्मांड को अपनी मुट्ठी में करना चाहता था। ब्रह्मांड एक बहुत बड़े संकट से गिर ने वाला था। उस में असीम काली शक्तियों की ऊर्जा समाहित थी जिससे वह अपने शत्रुओं का विनाश करेगा।

6

काल तंत्रास्त्र और धर्मयोद्धा

धरती पर अंधकार चारों ओर फैल चुका था। ऐसा प्रतीत होता था मानो सूर्य की रोशनी धरती पर आते-आते अपना दम तोड़ दिया हो। दिन और रात के बीच का अंतर धीरे-धीरे समाप्त होने लगा था। आकाश में हमेशा काले बादल छाए रहते हैं और सूर्य की किरणें उन बादलों मैं कहीं खो गई हो ऐसा प्रतीत होता है। कभी हरे-भरे रहने वाले खेत अब बंजर भूमि में बदलते जा रहे थे। नदियों का जल सूख चुका था और, उसमें भी जीवन का कोई चिन्ह दिखाई नहीं देता था।

गाँवों और शहर में भूख और भय का राज था। लोग अपने घरों के दरवाजे सूर्य ढलने से पहले बंद कर लेते। बच्चों की हँसी अब कहीं सुनाई नहीं देती थी। हर चेहरे पर चिंता, भय और असहायता छाई रहती थी। लोग धीरे-धीरे यह विश्वास खोने लगे थे कि कभी यह संसार फिर से प्रकाश देख पाएगा। इन सबका कारण एक ही था और उसका नाम था..

राजीव।

राजीव की काली सेना पूरी धरती पर फैल चुकी थी। वह जहाँ भी जाते, अपने पीछे विनाश और भय छोड़ जाते। गाँव और शहर जलाए जाते, मंदिर तोड़े जाते, आश्रमों में साधना कर रहे ऋषियों की हत्या कर दी जाती। निर्दोष लोगों को अधर्म के सामने झुकने पर मजबूर किया जाता।

और जो विरोध करता...

वह जीवित नहीं बचता सब लोग धीरे-धीरे भगवान पर भी विश्वास रखना छोड़ देते।

राजीव कोई साधारण मनुष्य नहीं था। वर्षों पहले उसने काली शक्तियों की साधना आरंभ की थी। शक्ति की लालसा में उसने अपने भीतर की मानवता को समाप्त कर दिया था। उसका शरीर तो मनुष्य का था, लेकिन उसकी आत्मा पूर्ण रूप से अंधकार की दासी बन चुकी थी। उसने अनेक तांत्रिकों और अधर्मी साधकों को अपने साथ मिला लिया था। उसकी सेना में ऐसे योद्धा थे जो दर्द महसूस नहीं करते थे उन्हें केवल और केवल दूसरों को सताने में मजा आता वे सभी राजीव के शक्तियों के नीचे काम करते। उनकी आँखों में दया नहीं, केवल विनाश दिखाई देता था।

लोग अब भगवानों की कथाएँ तो सुनते थे, पर उन्हें देखने की आशा खो चुके थे भगवान होते हैं तो वह हमारी मदद क्यों नहीं कर रहे इसी पर वह भगवानों को कोसते रहते। बच्चे ने अब सूर्य को केवल कहानियों में देख और सुना था। उनके लिए सूरज का प्रकाश अब किसी कल्पना से अधिक कुछ नहीं था।

लेकिन संसार का नियम है...

जब अधर्म अपनी सीमा पार करता है, तब धर्म स्वयं अपना रक्षक चुनता है।

दूर...

महेंद्र पर्वत की ऊँची चोटियों पर, घने जंगलों और बर्फीली हवाओं के बीच। जहां एक योद्धा दिन-रात स्वयं को युद्ध के लिए तैयार कर रहा था।

उसका नाम था...

शौर्य।

शौर्य की तलवार बिजली की गति से चलती थी। उसकी आँखों में ऐसा तेज था जिसे देखकर अनुभवी योद्धाओं का साहस भी डगमगा जाए। उसके हर प्रहार में अद्भुत संतुलन और शक्ति थी वह जब तलवार चलाता तो ऐसा प्रतीत होता कि इससे बड़ा तलवार बाज आज तक नहीं देखा।

लेकिन उसकी सबसे बड़ी शक्ति उसकी तलवार नहीं थी...

उसका धैर्य था।

और उसे यह सब सिखा रहे थे स्वयं भगवान परशुराम।

महेंद्र पर्वत की चोटी पर सुबह का समय था। ठंडी हवाएँ बह रही थीं। शौर्य एक विशाल पत्थर के सामने खड़ा था। उसकी आँखें बंद थीं और हाथ में तलवार।

अचानक उसने अपनी आँखें खोलीं।

क्षण भर में उसकी तलवार हवा में घूमी।

अगले ही पल वह विशाल पत्थर दो हिस्सों में बंट चुका था।

दूर खड़े परशुराम शांत भाव से यह दृश्य देख रहे थे। उनकी आँखों में संतोष स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।

"तुम्हारी गति पहले से अधिक बढ़ चुकी है," परशुराम बोले।

शौर्य ने सिर झुकाया।

"यह सब आपकी शिक्षा का परिणाम है, गुरुदेव।"

परशुराम कुछ क्षण तक उसे देखते रहे।

फिर उन्होंने कहा,

"नहीं शौर्य... यह केवल मेरी शिक्षा नहीं। तुम्हारे भीतर जो शक्ति है, वह साधारण नहीं है।"

शौर्य ने आश्चर्य से उनकी ओर देखा।

"क्या मतलब, गुरुदेव?"

परशुराम धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़े और बोले "समय आ गया है कि तुम अपने जन्म का सत्य जानो। शौर्य कुछ पल शांत रहा। उसके मन में अनेक प्रश्न उठने लगे।

"जन्म का सत्य?"

"तुम्हारे पिता महान ऋषि देवांशिर थे। तुम्हारी माता वेदांगी एक अत्यंत शक्तिशाली साधिका थीं। वर्षों तक उन्होंने महादेव की कठोर तपस्या की।"

शौर्य ध्यान से सुन रहा था।

"उन्होंने महादेव से एक वरदान माँगा था," परशुराम बोले, "ऐसा पुत्र... जो धर्म की रक्षा करे। ऐसा योद्धा जो अधर्म के विरुद्ध लड़े और धर्म की पुनः स्थापना करें।

"और फिर?"

"महादेव ने उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर उने वरदान दिया। तुम्हारी आत्मा में उनकी दिव्य ऊर्जा का अंश है।"

ये शब्द सुनकर शौर्य स्तब्ध रह गया।

अचानक उसे अपने बचपन की अनेक घटनाएँ याद आने लगीं। कैसे वह सामान्य बच्चों से अधिक शक्तिशाली था। कैसे उसने कम आयु में ही कठिन विद्याएँ सीख ली थीं। कैसे हर युद्ध कला मानो स्वयं उसके भीतर जाग उठती थी। "इसी कारण तुम इतनी तेजी से हर विद्या सीख पाए," परशुराम बोले। "और इसी कारण राजीव तुम्हारे अस्तित्व से भयभीत है... जबकि उसने तुम्हें देखा तक नहीं।"

शौर्य की आँखों में उलझन थी।

“अगर यह सत्य है... तो फिर मैं क्या हूँ?”

परशुराम मुस्कुराए।

“तुम कोई देवता नहीं हो। कुछ क्षण के मौन के बाद उन्होंने कहा,

“तुम एक धर्मयोद्धा हो।”

उन शब्दों के साथ ही वातावरण में मानो ऊर्जा की लहर फैल गई।

उसी समय पर्वत के नीचे से युद्ध के नगाड़ों की आवाज गूँज उठी।

एक शिष्य तेजी से वहाँ पहुँचा।

“गुरुदेव!” वह घबराई आवाज में बोला, “राजीव की काली सेना महेंद्र पर्वत की ओर बढ़ रही है। परशुराम शांत रहे मानो उन्हें पहले से इसका आभास था। उन्होंने शौर्य की ओर देखा।

“वक्त आ गया है,” उन्होंने कहा, “कि तुम अपनी शक्तियों को पहचानो और इन दुराचारियों को अंत कर दो।” शौर्य ने बिना किसी भय के सिर झुकाया और बोला जी गुरु देव।

वह परशुराम के चरणों में झुका और बोला,

“गुरुदेव, मुझे केवल आपका आशीर्वाद चाहिए। परशुराम ने अपना हाथ उसके मस्तक पर रखा। क्षण भर में शौर्य के अपनी तलवार उठाई उसकी आँखों का तेज और अधिक प्रखर हो उठा।

धर्म सदैव तुम्हारे साथ रहेगा, परशुराम बोले। शौर्य उठा। उसने अपनी तलवार उठाई। और फिर वह पर्वत से नीचे उतरने लगा।

हर कदम के साथ उसका संकल्प और मजबूत होता जा रहा था।

दूर आकाश में बिजली चमक रही थी।

मानो स्वयं प्रकृति आने वाले युद्ध की साक्षी बनने को तैयार हो।

दूसरी ओर... एक विशाल काली गुफा के भीतर राजीव ध्यान मुद्रा में बैठा था। उसके चारों ओर काले धुएँ का घेरा घूम रहा था। दीवारों पर अजीब प्रतीक बने हुए थे। अचानक उसकी आँखें खुलीं।

उसने अपनी काली शक्तियों के माध्यम से महेंद्र पर्वत का दृश्य देख लिया था।

और पहली बार... उसने शौर्य को देखा।

राजीव धीरे-धीरे मुस्कुराने लगा। फिर उसकी हँसी पूरी गुफा में गूँज उठी।

"तो यही है वह धर्मयोद्धा..."

उसके पास खड़ा तांत्रिक काँप उठा।

"महाराज, उसकी आँखों में एक अजीब तेज है।"

राजीव अपनी सिंहासन जैसी चट्टान से उठा।

"मैं देखना चाहता हूँ," वह बोला, "कि महादेव का यह दिव्य अंश मेरी सेना के सामने कितनी देर टिकता है।"

महेंद्र पर्वत के नीचे अब युद्ध का मैदान तैयार था।

राजीव की काली सेना हजारों की संख्या में वहाँ खड़ी थी। उनके शरीर पर काले कवच थे और हाथों में विचित्र अस्त्र। कुछ सैनिकों की आँखें पूरी तरह काली थीं, मानो उनकी आत्मा समाप्त हो चुकी हो।

उसी समय...

धीरे-धीरे धूल के बीच कुछ विशाल दिखाई देने लगा।

एक योद्धा ऊँचा कद पर्वत जैसा शरीर आँखों में दिव्य तेज। चेहरे पर शांत मुस्कान। हाथ में चमकती तलवार लेकर खड़ा था शौर्य।

पूरी सेना कुछ क्षण के लिए रुक गई।

उनके भीतर पहली बार भय उत्पन्न हुआ। शौर्य बिना रुके उनकी ओर बढ़ता रहा।

उसके कदमों की आवाज युद्धभूमि में गूँज रही थी।

और दूर बैठा राजीव...एक पल के लिए ऐसा महसूस कर रहा था मानो उसने अपने सामने स्वयं अपने काल को देख लिया हो।

“मार डालो उसे!”

एक सेनापति चिल्लाया।

क्षण भर में सैकड़ों सैनिक शौर्य की ओर दौड़ पड़े।

लेकिन अगले ही पल... हवा में एक तेज प्रकाश चमका। शौर्य की तलवार बिजली की गति से घूमी।

और देखते ही देखते अनेक सैनिकों के हथियार हवा में उड़ गए। कुछ के हाथ कटकर भूमि पर गिर पड़े। उनकी चीखें पूरे पर्वत में गूँज उठीं। लेकिन शौर्य के चेहरे पर क्रोध नहीं था। वह शांत था। मानो वह केवल अपना धर्म निभा रहा हो।

एक विशाल सैनिक उसके पीछे से वार करने आया। शौर्य बिना पीछे देखे झुका। उसकी तलवार घूमी और अगले ही पल वह विशाल सैनिक भूमि पर गिर चुका था।

राजीव यह सब अपनी काली शक्तियों के माध्यम से देख रहा था। राजीव की मुस्कान धीरे-धीरे समाप्त होने लगी।

“असंभव...”

तांत्रिक घबराई आवाज में बोला,

“महाराज... उसकी गति मानवों जैसी नहीं है।” राजीव की आँखें मे क्रोध दिखाई दे रहा था।

“यह केवल शुरुआत है,” वह बोला। लेकिन उसके भीतर पहली बार चिंता उत्पन्न हो चुकी थी।

युद्धभूमि में शौर्य अब चारों ओर से घिर चुका था। हजारों सैनिक उसकी ओर बढ़ रहे थे अचानक शौर्य ने अपनी आँखें बंद कीं होंठों पर मंत्रों का उच्चारण आरंभ हुआ वातावरण बदलने लगा आकाश में बिजली गरजने लगी हवा तीव्र गति से बहने लगी और अगले ही पल...उसके सामने एक दिव्य धनुष प्रकट हुआ।

उस धनुष से निकलती ऊर्जा इतनी प्रबल थी कि अनेक सैनिक पीछे हट गए।

शौर्य ने धनुष उठाया।

उसकी उंगलियाँ प्रत्यंचा पर गईं एक दिव्य बाण प्रकट हुआ।

लेकिन वह साधारण बाण नहीं था।

उसमें प्रकाश और अग्नि दोनों की ऊर्जा समाई हुई थी। शौर्य ने सामने खड़े काली सेना के सेनापति की ओर निशाना साधा क्षण भर में बाण छोड़ा गया। पूरा युद्धक्षेत्र काँप उठा जब धूल हट गई...तो सेनापति का सिर उसके शरीर से अलग हो चुका था।

शौर्य ने उस कटे हुए सिर को उठाया उसकी आँखों में अब भी वही शांत भाव था फिर उसने मंत्रों के साथ अपना बाण चलाया।

वह सिर हवा को चीरता हुआ सीधा राजीव की काली गुफा की ओर बढ़ गया। गुफा के भीतर अचानक एक तेज धमाका हुआ।

सैनिक भयभीत होकर पीछे हट गए।

राजीव के सिंहासन के सामने उसकी सेना के सेनापति का कटा हुआ सिर आकर गिरा। कुछ क्षणों तक पूरी गुफा में सन्नाटा छाया रहा। राजीव उस सिर को देखता रहा फिर उसका क्रोध से फूट गया।

उसकी आँखों से काली ऊर्जा निकलने लगी पूरी गुफा काँपने लगी "उसने मुझे चुनौती दी है..."राजीव की आवाज गूँज उठी।

तांत्रिक काँपते हुए बोला, "महाराज... उसकी आँखों में वही तेज दिखाई देता है जो कभी परशुराम की आँखों में दिखाई देता था।"

राजीव ने पहली बार मुस्कुराने बंद कर दिया। युद्धभूमि में शौर्य अकेला खड़ा था। उसके चारों ओर काली सेना के सैकड़ों सैनिकों के शव पड़े थे लेकिन सेना समाप्त नहीं हुई थी। राजीव ने अपने सबसे भयानक योद्धाओं को मैदान में उतार दिया था।

वे सामान्य सैनिक नहीं थे।

उनके शरीर पर विचित्र काले चिह्न बने थे। उनकी आँखों से धुआँ निकल रहा था। कुछ के हाथों में आग जैसी ऊर्जा थी।

"यह राजीव के योद्धा हैं," पर्वत के ऊपर खड़े एक शिष्य ने भयभीत होकर कहा। परशुराम शांत भाव से युद्ध देख रहे थे।

"अब शौर्य की वास्तविक परीक्षा आरंभ होगी," उन्होंने कहा।

काले योद्धा गरजते हुए शौर्य की ओर दौड़े।

उनकी गति सामान्य मनुष्यों से कई गुना अधिक थी एक योद्धा ने काली अग्नि का गोला शौर्य की ओर फेंका लेकिन शौर्य ने अपनी तलवार आगे बढ़ाई। क्षण भर में उसकी तलवार दिव्य प्रकाश से चमक उठी।

जैसे ही काली अग्नि उस प्रकाश से टकराई...वह समाप्त हो गई।

शौर्य ने तेजी से आगे बढ़कर एक योद्धा पर प्रहार किया।

लेकिन इस बार उसका विरोधी तुरंत नहीं गिरा।

वह हँसने लगा। "हम मृत्यु से नहीं डरते!" वह गरजा शौर्य ने उसकी आँखों में देखा। "क्योंकि तुम पहले ही अपनी आत्मा खो चुके हो," शौर्य बोला अगले ही पल उसकी तलवार घूमी। और वह काली सेना के योद्धा दो हिस्सों में विभाजित होकर भूमि पर गिर पड़ा युद्ध और भी भयानक होता जा रहा था।

आकाश काला हो चुका था। बिजली लगातार चमक रही थी। पर्वत की चट्टानें काँप रही थीं।

लेकिन हर बीतते क्षण के साथ शौर्य की शक्ति और बढ़ती जा रही थी।

मानो उसके भीतर छिपी दिव्य ऊर्जा धीरे-धीरे जाग रही हो।

दूर खड़े परशुराम ने अपनी आँखें बंद कीं। उन्होंने महसूस किया कि शौर्य के भीतर महादेव का अंश सक्रिय होने लगा है। "अभी नहीं..." उन्होंने मन ही मन कहा। "समय आने दो।"

उसी क्षण युद्धभूमि में एक भयानक गर्जना गूँजी। काली सेना के सैनिक अचानक पीछे हटने लगे। शौर्य ने सामने देखा।

और पहली बार उसके चेहरे का शांत भाव थोड़ा गंभीर हुआ।

क्योंकि उसके सामने अब एक विशाल राक्षसी प्राणी खड़ा था।

उस प्राणी की ऊँचाई दस हाथ से भी अधिक थी। उसका शरीर काले पत्थर जैसा कठोर था। आँखों से रक्त जैसी लाल रोशनी निकल रही थी।

“यह क्या है?”

शौर्य ने स्वयं से कहा।

दूर गुफा में राजीव मुस्कुराया।

“यह मेरा नया अस्त्र है,” वह बोला। “काली साधना से जन्मा विनाश।”

वह राक्षसी प्राणी गरजता हुआ शौर्य की ओर बढ़ा। उसके कदमों से धरती काँप उठी। उसने अपना विशाल हाथ उठाकर शौर्य पर प्रहार किया। शौर्य तेजी से पीछे हटा। जहाँ वह खड़ा था वहाँ भूमि फट चुकी थी। शौर्य समझ गया कि यह साधारण शत्रु नहीं है। राक्षस लगातार प्रहार कर रहा था। उसकी शक्ति अत्यंत भयानक थी। शौर्य ने तलवार से उसके शरीर पर कई वार किए।

लेकिन उसके काले पत्थर जैसे शरीर पर केवल हल्के निशान बने। “तुम उसे केवल बल से नहीं हरा सकते,” अचानक परशुराम की आवाज उसके मन में गूँजी। “अपनी आत्मा की शक्ति पहचानो।” शौर्य ने अपनी आँखें बंद कीं। कुछ क्षणों के लिए उसके चारों ओर का शोर मानो समाप्त हो गया। उसे केवल अपने भीतर की धड़कन सुनाई दे रही थी।

और फिर...

उसके भीतर से एक दिव्य ऊर्जा जाग उठी उसकी आँखें चमकने लगीं। उसके शरीर के चारों ओर सफेद प्रकाश फैल गया पूरी युद्धभूमि उस प्रकाश से जगमगा उठी। काली सेना भयभीत होकर पीछे हटने लगी। राक्षसी प्राणी पहली बार रुक गया।

शौर्य ने अपनी तलवार दोनों हाथों से पकड़ी उसके होंठों पर महादेव का मंत्र गूँजने लगा।

"ॐ नमः शिवाय..."

हर मंत्र के साथ उसकी तलवार का प्रकाश और तीव्र हो रहा था।

दूर खड़ा राजीव क्रोध से भर उठा। "नहीं!" वह गरजा। "यह संभव नहीं! लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी।

शौर्य बिजली की गति से आगे बढ़ा। उसने पूरी शक्ति के साथ अपनी तलवार राक्षस के सीने में उतार दी। क्षण भर के लिए समय रुक गया। फिर एक भयानक विस्फोट हुआ। राक्षसी प्राणी चीखता हुआ प्रकाश में विलीन हो गया।

पूरी काली सेना भय से काँप उठी उन्होंने पहली बार अपने भीतर हार का भय महसूस किया। शौर्य शांत खड़ा था। उसकी तलवार से अभी भी दिव्य प्रकाश निकल रहा था।

दूर महेंद्र पर्वत की चोटी पर परशुराम की आँखों में गर्व दिखाई दे रहा था "धर्म ने अपना योद्धा पा लिया है," उन्होंने धीरे से कहा।

लेकिन दूसरी ओर...

राजीव का क्रोध अब अपनी सीमा पार कर चुका था उसकी गुफा की दीवारों में दरारें पड़ने लगीं काली ऊर्जा उसके शरीर से निकलकर चारों ओर फैल रही थी "अब मैं स्वयं युद्धभूमि में उतरूँगा..."

उसने क्रोधित स्वर में कहा।

तांत्रिक भयभीत होकर पीछे हट गए क्योंकि वे जानते थे...

जब राजीव स्वयं युद्धभूमि में उतरता है, तब केवल विनाश होता है। युद्धभूमि में खड़ा शौर्य दूर क्षितिज की ओर देख रहा था। उसे महसूस हो रहा था कि एक और भी बड़ा तूफान उसकी ओर बढ़ रहा है।

आकाश पूरी तरह काला हो चुका था बिजली लगातार चमक रही थी। हवा में भय फैल चुकी थी। लेकिन शौर्य की आँखों में अब भय नहीं था। केवल संकल्प था। वह जान चुका था कि उसका जन्म किसी साधारण जीवन के लिए नहीं हुआ।

उसका जन्म धर्म की रक्षा के लिए हुआ था।

और अब...

धर्म और अधर्म का वास्तविक युद्ध आरंभ होने वाला था दूर कहीं गुफा के भीतर राजीव की भयानक हँसी फिर से गूँजी।

और उसी के साथ...

महेंद्र पर्वत पर आने वाले महायुद्ध की शुरुआत हो चुकी थी।

लेकिन उस रात केवल महेंद्र पर्वत ही नहीं जाग रहा था...धरती के दूसरे छोर पर, बर्फ से ढकी एक प्राचीन गुफा के भीतर भी हलचल होने लगी थी।

वहाँ सदियों से एक विशाल द्वार बंद था। उस द्वार पर प्राचीन मंत्र अंकित थे और उसके चारों ओर दिव्य जंजीरें बंधी हुई थीं।

अचानक...

उन जंजीरों में दरार पड़ने लगी।

पूरा पर्वत काँप उठा गुफा के भीतर से एक भारी साँसों की आवाज सुनाई दी। मानो कोई ऐसी शक्ति जाग रही हो जिसे हजारों वर्षों पहले बंद किया गया था।

उसी समय एक वृद्ध साधु तेजी से उस गुफा की ओर बढ़ा। उसकी आँखों में भय साफ दिखाई दे रहा था।

“नहीं...” वह काँपती आवाज में बोला, “अगर वह जाग गया... तो पूरी सृष्टि संकट में पड़ जाएगी।”

दूसरी ओर राजीव अपनी गुफा में अकेला खड़ा था उसकी आँखों में क्रोध की ज्वाला जल रही थी। उसके सामने हवा में काली ऊर्जा का एक चक्र घूम रहा था उसने अपने हाथ उस ऊर्जा पर रखे। क्षण भर में उसके सामने एक धुंधली आकृति प्रकट हुई।

एक रहस्यमयी चेहरा... जिसकी आँखें पूरी तरह सफेद थीं।

“तुम हार रहे हो, राजीव,” वह रहस्यमयी स्वर बोला।

राजीव क्रोधित हो उठा। “मैं कभी नहीं हार सकता!”

आकृति हल्का मुस्कुराई।

“फिर उस शक्ति को मुक्त करो...”

राजीव कुछ पल शांत रहा। “क्या सच में वह समय आ गया है?” “धर्मयोद्धा जाग चुका है,” वह आवाज गूँजी। “अब तुम्हें अंधकार के वास्तविक स्वामी को जगाना होगा। ये शब्द सुनते ही राजीव की आँखों में भय की हल्की झलक दिखाई दी।

महेंद्र पर्वत पर शौर्य अकेला बैठा आकाश की ओर देख रहा था।

युद्ध जीतने के बाद भी उसके मन को शांति नहीं मिल रही थी।

उसे ऐसा महसूस हो रहा था मानो आने वाला संकट इससे भी कहीं अधिक भयानक हो। उसी समय परशुराम उसके पास आए।

“तुम्हारे मन में प्रश्न हैं,” उन्होंने कहा। शौर्य ने धीरे से पूछा,

“गुरुदेव... क्या राजीव ही सबसे बड़ा शत्रु है?”

परशुराम कुछ क्षण शांत रहे और बोले “नहीं,” उन्होंने गंभीर स्वर में कहा।

“राजीव तो केवल एक मोहरा है।

“तो फिर असली शत्रु कौन है?

परशुराम की आँखों में पहली बार चिंता दिखाई दी। “एक ऐसी शक्ति... जिसका नाम लेने से भी ऋषि भयभीत हो जाते हैं।

उसी रात शौर्य को एक विचित्र स्वप्न दिखाई दिया। उसने स्वयं को एक विशाल युद्धभूमि में खड़ा देखा। चारों ओर केवल आग थी। पर्वत टूट रहे थे। नदियाँ रक्त की तरह लाल दिखाई दे रही थीं। और उस विनाश के बीच... एक विशाल छाया खड़ी थी।

उसकी आँखें जलते अंगारों जैसी थीं। उसकी आवाज पूरी धरती में गूँज रही थी।

“धर्मयोद्धा...” शौर्य ने तलवार उठाई।

“तुम कौन हो?”

वह छाया धीरे-धीरे मुस्कुराई।

“मैं वह अंधकार हूँ... जिससे देवता भी भय खाते हैं।”

अचानक वह छाया शौर्य की ओर बढ़ी।

और अगले ही पल—

शौर्य की नींद खुल गई।

उसकी साँसें तेज चल रही थीं। उसके माथे पर पसीना था। उसके हाथ पर एक काला चिन्ह उभर चुका था।

7

काले चिन्ह का रहस्य

सुबह की पहली किरणें महेंद्र पर्वत की चोटियों को छू रही थीं, लेकिन वातावरण में अजीब बेचैनी फैली थी। आकाश में काले बादल की छाई हुई थी। ऐसा लग रहा था मानो स्वयं प्रकृति किसी बड़े संकट का संकेत दे रही हो। शौर्य पूरी रात सो नहीं पाया था। उसके मन में वही भयावह स्वप्न बार-बार घूम रहा था। वह विशाल छाया… वह भयानक आवाज… और उसके हाथ पर उभरा वह काला चिन्ह। वह तेजी से भगवान परशुराम के आश्रम की ओर बढ़ा। परशुराम ध्यान मुद्रा में बैठे थे। उनके चारों ओर दिव्य ऊर्जा का प्रकाश फैल रहा था। जैसे ही शौर्य उनके पास पहुँचा, परशुराम ने धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलीं। "गुरुदेव…" शौर्य ने धीमे स्वर में कहा। उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया। जैसे ही परशुराम की नजर उस काले चिन्ह पर पड़ी, उनके चेहरे का भाव बदल गया यह चिन्ह तुम्हारे हाथ पे कैसे आया। "यह… कैसे संभव है…" उन्होंने धीमे स्वर में कहा। शौर्य घबरा गया। "गुरुदेव, यह चिन्ह क्या है?" कुछ क्षणों तक परशुराम मौन रहे। फिर उन्होंने गंभीर स्वर में कहा, "जिस शक्ति को हजारों वर्षों पहले देवताओं ने कैद किया था… उसने तुम्हें पहचान लिया है।"

शौर्य के मन में अनेको प्रश्न उभर रहे थे। "कौन सी शक्ति, गुरुदेव?" परशुराम धीरे-धीरे उठे और आकाश की ओर देखा तो काले बादलों में कुछ चमक रहा था उने उतना ध्यान नहीं दिया और कहने लगे।

“कई सदियों पहले देवताओं और असुरों के बीच एक भयानक युद्ध हुआ था। ऐसा युद्ध जिसने तीनों लोकों को हिला दिया था। उस युद्ध में एक असुर था… मायासुर।” जैसे ही यह नाम बोला गया, वातावरण में कंपन फैल गया। “मायासुर भगवान शिव का परम भक्त था।

उसने हजारों वर्षों तक कठोर तपस्या की। उसकी तपस्या इतनी प्रबल थी कि स्वयं महादेव उसके सामने प्रकट हुए।” शौर्य ध्यान से सुन रहा था। “भगवान शिव ने उससे वरदान माँगने को कहा। तब मायासुर बोला, ‘प्रभु, जब तक इस संसार में माया रहेगी, तब तक मेरा अंत कोई नहीं कर पाएगा।’”

शौर्य स्तब्ध रह गया। “और महादेव ने उसे यह वरदान दे दिया?” परशुराम शौर्य को कहते है की “भगवान शिव अपने भक्तों में भेदभाव नहीं करते जो कोई भी वरदान मांग ले तो उसे मन चाहा वरदान देते है। लेकिन मायासुर ने उस वरदान का गलत उपयोग किया।”

शौर्य परशुराम से पूछते हैं माया क्या है परशुराम कहते है के माया” वह शक्ति है जो मनुष्य को संसार के मोह, अहंकार, इच्छाओं और भ्रम में बांध देती है।

भगवद्गीता में श्रीकृष्ण कहते हैं कि यह संसार परिवर्तनशील है, लेकिन मनुष्य इसे स्थायी मानकर उसमें फँस जाता है । यही माया है।

सरल शब्दों में:

जो चीज़ अस्थायी है लेकिन हमें स्थायी लगती है वो माया है

“मैं”, “मेरा”, धन, पद, सुंदरता, क्रोध, लालच आदि में अत्यधिक आसक्ति सब माया है

सत्य को न पहचान पाना और बाहरी दुनिया को ही अंतिम सत्य मान लेना माया है।

परशुराम अब बताते है की उसने अपनी माया से तीनों लोकों में आतंक फैलाना शुरू कर दिया। उसकी शक्ति केवल युद्ध तक सीमित नहीं थी। वह लोगों के मन को नियंत्रित कर सकता था। वह लोगों के भीतर लालच, भय और मोह भर देता था। भाई भाई का शत्रु बन जाता। राजा अपने ही राज्य को नष्ट कर देते। ऋषि अपनी तपस्या भूल जाते।" शौर्य के सामने मानो वह पूरा दृश्य जीवित हो उठा। "उसकी माया इतनी प्रबल थी कि बड़े-बड़े देवता भी भ्रमित हो जाते थे। धीरे-धीरे असुरों ने स्वर्ग लोक पर भी अधिकार जमा लिया।

"देवराज इंद्र और सभी देवता भयभीत होकर भगवान शिव के पास पहुँचे। इंद्र ने कहा, 'प्रभु, मायासुर का अंत कैसे होगा?' भगवान शिव कुछ समय तक शांत रहे। फिर उन्होंने कहा, 'मायासुर का अंत तभी संभव है जब सृष्टि से माया समाप्त हो जाए।'" देवताओं के बीच सन्नाटा छा गया।

लेकिन प्रभु, इंद्र बोले, "माया तो मनुष्य के भीतर जन्म लेती रहती है। इसका अंत कैसे संभव है?" भगवान शिव ने कहा "यदि उसका अंत नहीं किया जा सकता… तो उसे बंदी अवश्य बनाया जा सकता है।" देवराज इंद्र ने पूछा, "लेकिन यह कार्य करेगा कौन?" तब भगवान शिव बोले, "जिसके हाथ पर काला चिन्ह होगा… वही मायासुर को रोक सकेगा।" देवगण तुरंत पृथ्वी पर उतर आए।

उन्होंने वर्षों तक उस व्यक्ति की खोज की जिसके हाथ पर वह काला चिन्ह था। अंततः उन्हें एक युवा योद्धा मिला। उसकी आँखों में अद्भुत तेज था और उसके हाथ पर वही चिन्ह मौजूद था। देवताओं ने उसे दिव्य अस्त्र-शस्त्र दिए और मायासुर से युद्ध करने भेज दिया। दोनों के बीच ऐसा युद्ध हुआ कि पर्वत टूट गए।

"लेकिन मायासुर की सबसे बड़ी शक्ति उसकी माया थी," परशुराम बोले। "वह लोगों को भ्रम में फँसा देता था। उसकी माया में प्रवेश करना आसान था…

लेकिन बाहर निकलना असंभव।" शौर्य गंभीर हो गया। "फिर उस योद्धा ने क्या किया?" परशुराम बोले, "उसने अपनी चेतना को पूर्ण रूप से शांत किया। वह स्वयं मायासुर की माया के भीतर गया… और भीतर से उसे तोड़ दिया।

"लेकिन केवल इतना पर्याप्त नहीं था। देवताओं के महान शिल्पकार विश्वकर्मा ने एक ऐसी जंजीर बनाई थी… जो स्वयं माया को बाँध सकती थी।" अचानक परशुराम ने अपने हाथ आगे बढ़ाए। क्षण भर में दिव्य प्रकाश प्रकट हुआ। उस प्रकाश के भीतर एक विशाल जंजीर दिखाई दी। उसके प्रत्येक छल्ले पर दिव्य मंत्र अंकित थे। "इसी जंजीर की सहायता से मायासुर को बंदी बनाया गया था।"

और उसे कैलाश पर्वत की एक बर्फीली गुफा में कैद कर दिया गया, परशुराम बोले। शौर्य की आँखें उस जंजीर पर टिक गईं "लेकिन अब तुम्हारे हाथ पर वही काला चिन्ह उभर आया है। इसका अर्थ है कि मायासुर फिर से जाग रहा है। शौर्य ने गंभीर स्वर में पूछा, "और यदि राजीव वहाँ पहुँच गया तो? राजीव के पास काल तंत्रास्त्र है। यदि उसने उसका प्रयोग कर लिया… तो।

वह मायासुर की सारी शक्ति अपने भीतर समाहित कर सकता है।" शौर्य के चेहरे पर चिंता उभर आई। "और यदि ऐसा हुआ?" "तो इस युद्ध को जीतना लगभग असंभव हो जाएगा।" लेकिन उन्हें यह आभास नहीं था कि उनकी सारी बातें कोई और भी सुन रहा था। दूर अपनी काली गुफा में बैठा राजीव अपनी शक्तियों के माध्यम से सब कुछ सुन रहा था।

राजीव की आँखों में चमक उभर आई। फिर अचानक उसकी हँसी पूरी गुफा में गूँज उठी। "तो यही रहस्य है…" उसके पास खड़ा तांत्रिक काँप उठा। "महाराज?" राजीव धीरे-धीरे उठा। "यदि मुझे मायासुर की शक्ति मिल गई… तो स्वयं देवता भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पाएँगे।

उसी क्षण आकाश में भयानक गर्जना हुई। पूरा महेंद्र पर्वत काँप उठा। काले बादलों के बीच दो लाल आँखें चमकीं। परशुराम बोले, "हमारे पास अधिक समय नहीं है। उन्होंने वह दिव्य जंजीर शौर्य को सौंप दी। "जिस गुफा में मायासुर बंद है... वहाँ उसकी माया तुम पर प्रभाव नहीं डाल सकेगी। यही तुम्हारी सबसे बड़ी शक्ति होगी।" शौर्य ने आदरपूर्वक जंजीर ग्रहण की। "गुरुदेव, मैं उसे फिर से बंदी बना दूँगा।"

परशुराम बोले, "ध्यान रखना... वह गुफा से बाहर नहीं निकलना चाहिए।" शौर्य ने चरण स्पर्श किए। "मुझे वहाँ पहुँचने का मार्ग बताइए।" परशुराम ने उसे कैलाश पर्वत तक पहुँचने का गुप्त मार्ग बताया। लेकिन... राजीव यह सब सुन चुका था। वह तुरंत अपने तांत्रिक के पास पहुँचा। "मुझे उस गुफा तक पहुँचने का मार्ग चाहिए।" तांत्रिक घबरा गया। "महाराज, वह मार्ग केवल देवताओं को ज्ञात है।" राजीव क्रोधित हो उठा। तभी तांत्रिक मुस्कुराया। "यदि अनुमति हो... तो एक उपाय है। हम शौर्य का पीछा करेंगे। और जब वह मायासुर से युद्ध करेगा... तब आप उसकी और मायासुर दोनों की शक्ति छीन लेंगे।" राजीव की आँखों में चमक आ गई। "एक तीर से दो शिकार..."

उधर शौर्य कैलाश पर्वत की यात्रा पर निकल चुका था। रास्ता अत्यंत कठिन था। चारों ओर बर्फीले तूफान चल रहे थे। ऊँचे पर्वत, गहरी खाइयाँ और ठंडी हवाएँ उसके रास्ते को और कठिन बना रही थीं। लेकिन शौर्य बिना रुके आगे बढ़ता रहा। कई दिनों की यात्रा के बाद उसे दूर कैलाश पर्वत दिखाई दिया। वह पर्वत साधारण नहीं था। उसके चारों ओर दिव्य ऊर्जा का प्रकाश फैला हुआ था। जैसे ही शौर्य पर्वत के भीतर पहुँचा, उसे एक विशाल गुफा दिखाई दी।

गुफा के प्रवेश द्वार पर प्राचीन मंत्र अंकित थे। तभी भीतर से एक भयानक गर्जना सुनाई दी। पूरी गुफा काँप उठी। और अगले ही पल... एक विशाल काली ऊर्जा बाहर फूट पड़ी। मायासुर जाग चुका था।

क्षण भर में उसके बंधन टूट गए। मायासुर धीरे-धीरे गुफा से बाहर आया। उसकी आँखें लाल अग्नि की तरह चमक रही थीं। उसकी आवाज पूरी पर्वत श्रृंखला में गूँज उठी। "तो... नया धर्मयोद्धा आ चुका है।" शौर्य ने तुरंत अपनी तलवार निकाल ली। "मैं तुम्हें फिर से बंदी बनाने आया हूँ।

मायासुर हँस पड़ा। "मनुष्य... तुम मुझे नहीं रोक सकते।" अगले ही पल दोनों के बीच भयंकर युद्ध शुरू हो गया। मायासुर अपनी माया से कभी हजारों सैनिक उत्पन्न कर देता... तो कभी पूरा वातावरण बदल देता। लेकिन शौर्य उसकी हर माया को काटता हुआ आगे बढ़ रहा था। कभी शौर्य भारी पड़ता... तो कभी मायासुर। पूरा कैलाश पर्वत युद्ध से काँप रहा था।

दूर खड़ा राजीव यह सब देख रहा था। जैसे ही उसने देखा कि मायासुर धीरे-धीरे कमजोर पड़ रहा है... वह युद्धभूमि में उतर आया। उसके हाथ में काल तंत्रास्त्र था। क्षण भर में उसने उस अस्त्र का प्रयोग किया। काली ऊर्जा का विशाल भंवर उत्पन्न हुआ। और अगले ही पल... मायासुर की सारी शक्ति राजीव के भीतर समाने लगी। मायासुर दर्द से चीख उठा। पहली बार शौर्य और राजीव आमने-सामने थे। राजीव की आँखों में अब पहले से कई गुना अधिक शक्ति थी। वह हँसने लगा। "तो तू है वह धर्मयोद्धा... जो मुझे हराएगा?" शौर्य ने तलवार कसकर पकड़ ली। अगले ही पल दोनों के बीच युद्ध शुरू हो गया।

लेकिन इस बार राजीव बहुत अधिक शक्तिशाली था। उसके प्रहार इतने भयानक थे कि शौर्य लगातार पीछे धकेला जा रहा था। शौर्य का एक भी वार राजीव को चोट नहीं पहुँचा पा रहा था। राजीव हँसते हुए बोला, "तुम अभी अपनी शक्ति को पहचानते ही नहीं हो।

अचानक उसने काल तंत्रास्त्र से शौर्य पर वार किया। भयानक विस्फोट हुआ। शौर्य दूर जाकर चट्टानों से टकराया। उसका शरीर बुरी तरह घायल हो चुका

था। धीरे-धीरे उसकी आँखें बंद होने लगीं। राजीव उसे अधमरा छोड़कर वापस अपनी गुफा की ओर चला गया। पूरा वातावरण शांत हो गया।

तभी एक दिव्य प्रकाश वहाँ प्रकट हुआ। उस प्रकाश की चमक इतनी प्रबल थी कि उसके सामने सूर्य का प्रकाश भी फीका लग रहा था। स्वयं भगवान शिव प्रकट हुए थे। उन्होंने शौर्य की ओर देखा। "उठो... धर्मयोद्धा।" भगवान शिव की आवाज सुनकर शौर्य में हल्की चेतना लौटी। वह घायल अवस्था में उठने का प्रयास करने लगा। भगवान शिव ने अपने हाथ उसके मस्तक पर रखे। क्षण भर में उसकी सारी चोटें भरने लगीं।

शौर्य आश्चर्य से उन्हें देखता रह गया। भगवान शिव बोले, "तुम्हारे भीतर मेरी शक्ति का अंश है। लेकिन जब तक तुम स्वयं उसे स्वीकार नहीं करोगे... तब तक राजीव को नहीं हरा पाओगे।"

शौर्य ने पूछा, "प्रभु, मैं क्या करूँ?" भगवान शिव बोले, "तुम्हें राजीव की गुफा में जाकर माँ काली को मुक्त करना होगा।" शौर्य चौंक उठा। "माँ काली?" "राजीव ने अपनी तपस्या से उन्हें बाँध रखा है। जब तक महाकाली मुक्त नहीं होंगी... तब तक राजीव की मृत्यु का द्वार नहीं खुलेगा।" शौर्य ने पूछा, "लेकिन मैं उन्हें मुक्त कैसे करूँ?" भगवान शिव मुस्कुराए। क्षण भर में उनके हाथ में एक दिव्य तलवार प्रकट हुई। उस तलवार से

चंद्रमा जैसा प्रकाश निकल रहा था। "यह चंद्रशिला है। यह तलवार केवल धर्मयोद्धा ही धारण कर सकता है।" उन्होंने वह तलवार शौर्य को सौंप दी। "जब तुम अपने भीतर की शक्ति को पहचान लोगे... तभी यह तलवार अपनी वास्तविक शक्ति दिखाएगी।"

इतना कहकर भगवान शिव धीरे-धीरे प्रकाश में विलीन होने लगे। शौर्य ने हाथ जोड़ दिए। "प्रभु..." लेकिन अगले ही पल वह दिव्य प्रकाश गायब हो चुका था। शौर्य कुछ क्षण वहीं खड़ा रहा। फिर उसने चंद्रशिला को मजबूती से पकड़ा।

उसकी आँखों में अब नया संकल्प था। कुछ समय बाद शौर्य वापस महेंद्र पर्वत पहुँचा। परशुराम उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। जैसे ही उनकी नजर चंद्रशिला पर पड़ी, उनकी आँखों में आश्चर्य और गर्व दोनों उभर आए। वे समझ चुके थे कि स्वयं महादेव ने अब शौर्य को अपना धर्मयोद्धा स्वीकार कर लिया है। लेकिन दूसरी ओर… राजीव की शक्ति अब पहले से कहीं अधिक बढ़ चुकी थी। और आने वाला युद्ध… सिर्फ धरती के लिए नहीं, पूरी सृष्टि के भविष्य के लिए होने वाला था।

महेंद्र पर्वत पर लौटने के बाद भी शौर्य के मन को शांति नहीं मिल रही थी। उसके भीतर कुछ बदल चुका था। चंद्रशिला उसके हाथ में आते ही उसे ऐसा महसूस हो रहा था मानो तलवार जीवित हो। जब भी वह उसे छूता, उसके भीतर एक दिव्य ऊर्जा प्रवाहित होने लगती। परशुराम दूर खड़े उसे देख रहे थे। "तुम बदल रहे हो, शौर्य," उन्होंने गंभीर स्वर में कहा। शौर्य ने उनकी ओर देखा। "गुरुदेव… मुझे अपने भीतर अजीब शक्ति महसूस हो रही है। लेकिन साथ ही एक भय भी।" परशुराम धीरे-धीरे उसके पास आए। "हर महान शक्ति अपने साथ परीक्षा लेकर आती है। तुम्हें अपने भीतर के भय को हराना होगा।" तभी अचानक महेंद्र पर्वत की धरती काँप उठी। आश्रम के सभी शिष्य घबरा गए। आकाश में काले बादल घूमने लगे। बिजली की भयानक गर्जना पूरे पर्वत में गूँज उठी। परशुराम की आँखें गंभीर हो गईं। "राजीव…" उन्होंने धीमे स्वर में कहा। दूर अपनी काली गुफा में राजीव अब पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली हो चुका था। मायासुर की शक्ति उसके भीतर समा चुकी थी। उसके चारों ओर काली ऊर्जा का भयंकर तूफान घूम रहा था। उसकी आँखों से लाल अग्नि निकल रही थी। तांत्रिक भयभीत होकर उसके सामने झुका हुआ था। "महाराज… आपकी शक्ति अब देवताओं के समान हो चुकी है।" राजीव जोर-जोर से हँसने लगा। "देवताओं के समान नहीं…" वह बोला, "अब मैं देवताओं से भी ऊपर हूँ।" तभी उसके सामने काली ऊर्जा में एक विचित्र दृश्य प्रकट

हुआ। उसमें शौर्य दिखाई दे रहा था… हाथ में चंद्रशिला लिए। राजीव की मुस्कान धीरे-धीरे गायब हो गई। “तो महादेव ने उसे स्वीकार कर लिया…” उसकी आवाज भारी हो गई। कुछ क्षण बाद उसने अपनी मुट्ठी भींच ली। “लेकिन अब बहुत देर हो चुकी है। इस संसार पर केवल मेरा अधिकार होगा।”

उसी रात शौर्य ध्यान में बैठा था। उसके सामने चंद्रशिला रखी हुई थी। अचानक तलवार चमकने लगी। उसके चारों ओर नीला प्रकाश फैल गया। शौर्य की आँखें बंद थीं, लेकिन उसे अपने भीतर अजीब दृश्य दिखाई देने लगे। उसने स्वयं को एक विशाल युद्धभूमि में खड़ा देखा। चारों ओर लाखों सैनिकों के शव पड़े थे। आकाश रक्त जैसा लाल था। तभी उसने सामने एक विशाल सिंहासन देखा। उस सिंहासन पर बैठा व्यक्ति पूरी तरह अंधकार में छिपा हुआ था। केवल उसकी लाल आँखें दिखाई दे रही थीं। “धर्मयोद्धा…” वह भारी आवाज गूँजी। शौर्य ने तलवार उठाई। “तू कौन है?” वह आकृति धीरे-धीरे हँसी। “मैं वह हूँ… जिसे स्वयं समय भी रोक नहीं सकता।” अचानक पूरा दृश्य टूट गया। शौर्य ने अपनी आँखें खोल दीं। उसकी साँसें तेज चल रही थीं। तभी उसने देखा… उसके हाथ का काला चिन्ह पहले से अधिक चमक रहा था।

अगली सुबह परशुराम ने सभी शिष्यों को आश्रम के भीतर बुलाया। वातावरण गंभीर था। “समय आ चुका है,” परशुराम बोले। “राजीव अब पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली हो चुका है। उसका अगला लक्ष्य केवल पृथ्वी नहीं… स्वर्ग लोक भी होगा।” सभी शिष्य भयभीत हो उठे। तभी शौर्य आगे बढ़ा। “गुरुदेव, अब हमें क्या करना होगा?” परशुराम कुछ क्षण शांत रहे। फिर बोले, “तुम्हें माँ काली को मुक्त करना होगा। वही राजीव के अंत की कुंजी हैं।” शौर्य ने चंद्रशिला को मजबूती से पकड़ा। “मैं तैयार हूँ।” परशुराम ने उसकी आँखों में देखा। “यह मार्ग सरल नहीं होगा। राजीव की गुफा केवल काली शक्तियों का स्थान नहीं… वह स्वयं मृत्यु का द्वार है।”

दूसरी ओर राजीव अपने काल तंत्रास्त्र के सामने बैठा था। वह लगातार मंत्रों का उच्चारण कर रहा था। अचानक उसके सामने काली ऊर्जा से एक द्वार प्रकट हुआ। उस द्वार के भीतर से भयानक चीखें सुनाई दे रही थीं। तांत्रिक काँप उठा। "महाराज… यह कौन सी शक्ति है?" राजीव मुस्कुराया। "यह नरक द्वार है।" तांत्रिक भयभीत हो गया। "यदि यह खुल गया तो…" राजीव उसकी ओर मुड़ा। "तो पूरी पृथ्वी पर केवल अंधकार बचेगा।" उसकी आँखों में पागलपन साफ दिखाई दे रहा था। "और तब… स्वयं देवता भी इस संसार को नहीं बचा पाएँगे।"

उधर शौर्य यात्रा की तैयारी कर रहा था। उसने चंद्रशिला अपनी कमर पर बाँधी। तभी अचानक उसके सामने एक वृद्ध ऋषि प्रकट हुए। उनकी आँखों में दिव्य तेज था। "धर्मयोद्धा," उन्होंने कहा, "तुम्हारे लिए एक संदेश है।" शौर्य ने आदरपूर्वक प्रणाम किया। "कौन हैं आप?" ऋषि मुस्कुराए। "मैं उन सप्तऋषियों में से एक हूँ जिन्होंने हजारों वर्ष पहले मायासुर का युद्ध देखा था।" शौर्य ध्यान से सुनने लगा। ऋषि बोले, "ध्यान रखना… राजीव की सबसे बड़ी शक्ति उसका अस्त्र नहीं, उसका क्रोध है। यदि वह पूरी तरह अंधकार में डूब गया… तो वह स्वयं विनाश बन जाएगा।"

शौर्य ने पूछा, "तो मैं उसे कैसे रोकूँ?" ऋषि ने उत्तर दिया, "तुम्हें पहले स्वयं को पहचानना होगा।" यह कहकर उन्होंने अपने हाथ आगे बढ़ाए। क्षण भर में एक दिव्य मणि प्रकट हुई। वह नीले प्रकाश से चमक रही थी। "यह रुद्र मणि है," ऋषि बोले। "जब तुम्हारी आत्मा कमजोर पड़ने लगे… यह तुम्हें मार्ग दिखाएगी।" शौर्य ने आदरपूर्वक वह मणि ग्रहण की। तभी अचानक तेज हवा चलने लगी। ऋषि धीरे-धीरे प्रकाश में विलीन होने लगे। "याद रखना, धर्मयोद्धा…" उनकी आवाज गूँजी, "अंधकार को केवल शक्ति से नहीं… आत्मा के प्रकाश से हराया जाता है।"

उसी समय राजीव की गुफा में अचानक हलचल मच गई। गुफा की दीवारों पर बने प्राचीन मंत्र चमकने लगे। तांत्रिक घबराकर पीछे हट गया। "महाराज… कोई शक्ति इस गुफा में प्रवेश करने का प्रयास कर रही है।" राजीव ने अपनी आँखें बंद कीं। कुछ क्षण बाद वह मुस्कुराया। "वह आ रहा है…" तांत्रिक काँप उठा। "धर्मयोद्धा?" राजीव धीरे-धीरे उठा। "हाँ… और इस बार वह स्वयं मृत्यु के मुख में आएगा।" उसने अपने हाथ फैलाए। पूरे गुफा में काली ऊर्जा फैल गई। "मैं उसकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ…" महेंद्र पर्वत से निकलते समय परशुराम ने शौर्य को रोका। "एक बात याद रखना," उन्होंने गंभीर स्वर में कहा। "यदि परिस्थिति तुम्हारे नियंत्रण से बाहर हो जाए… तो अपने भीतर की शक्ति को जागृत करना।" शौर्य ने पूछा, "लेकिन मैं उसे कैसे पहचानूँ?" परशुराम मुस्कुराए। "जब तुम्हारा मन पूरी तरह शांत हो जाएगा… तब तुम्हें स्वयं उत्तर मिल जाएगा।" शौर्य ने सिर झुकाया। फिर वह धीरे-धीरे पर्वत से नीचे उतरने लगा। दूर आकाश में काले बादल फिर से घिरने लगे थे। ऐसा लग रहा था मानो पूरी प्रकृति आने वाले महायुद्ध की तैयारी कर रही हो।

दूर कहीं अंधकार के बीच राजीव खड़ा था। उसके पीछे नरक द्वार धीरे-धीरे खुल रहा था। भीतर से हजारों चीखें सुनाई दे रही थीं। राजीव की आँखों में पागलपन भरी चमक थी। "अब कोई मुझे नहीं रोक सकता…" वह हँसते हुए बोला। तभी अचानक उसकी हँसी रुक गई। उसे अपने पीछे किसी की उपस्थिति महसूस हुई। उसने मुड़कर देखा। वहाँ केवल अंधकार था… लेकिन उस अंधकार के भीतर दो विशाल लाल आँखें चमक रही थीं। पहली बार राजीव के चेहरे पर भय दिखाई दिया। एक भारी आवाज गूँजी— "तुमने मुझे जगाया है, राजीव…" पूरा वातावरण काँप उठा। और उसी क्षण… दूर पर्वतों के बीच खड़ा शौर्य अचानक रुक गया। उसे महसूस हो चुका था कि आने वाला युद्ध बहुत भयानक होगा केवल राजीव के विरुद्ध नहीं… उस की काली शक्ति से भी होगा

8

मां काली की मुक्ति और महायुद्ध

भगवान शिव वरदान के बाद शौर्य के भीतर जैसे एक नई शक्ति का जन्म हो चुका था। महेंद्र पर्वत की बर्फीली चोटियों पर बिताए गए वर्षों ने उसके शरीर को ही नहीं बल्कि उसकी आत्मा को भी तपाकर एक धर्मयोद्धा बना दिया था। अब उसकी आँखों में केवल एक ही लक्ष्य था — अधर्म का अंत। लेकिन वह यह भी जानता था कि राजीव को हराना कोई साधारण युद्ध नहीं होगा। राजीव अब केवल एक मनुष्य नहीं रहा था, वह अंधकार और काली शक्तियों का ऐसा केंद्र बन चुका था जिसने पूरी पृथ्वी को भय और विनाश में धकेल दिया है। धरती पर सूरज की रोशनी कमजोर पड़ चुकी थी। खेत सूख रहे थे, नदियाँ सिकुड़ रही थीं और लोगों का विश्वास धीरे-धीरे टूटता जा रहा था। ऐसे समय में भगवान परशुराम शौर्य के पास आए। उनके चेहरे पर गंभीरता थी। उन्होंने कहा, “वत्स, अब समय आ चुका है। यदि तुम्हें अधर्म की इस काली शक्ति को समाप्त करना है, तो तुम्हें देवताओं से सहायता मांगनी होगी। अकेले यह युद्ध जीतना संभव नहीं।” शौर्य शांत होकर ध्यान में बैठ गया। उसने अपनी मन को स्थिर किया और महादेव का स्मरण करते हुए देवताओं से सहायता की प्रार्थना की। कुछ ही क्षणों में महेंद्र पर्वत का वातावरण बदलने लगा। तेज हवाएँ चलने लगीं, आकाश में बिजली चमकने लगी और एक दिव्य प्रकाश पूरे पर्वत पर फैल गया। अगले ही पल देवगण प्रकट हुए। देवराज इंद्र, अग्निदेव, वरुण, वायु और अनेक दिव्य शक्तियाँ वहाँ उपस्थित थीं।

उनकी दिव्य आभा से पूरा पर्वत प्रकाशित हो उठा। शौर्य ने सिर झुका कर उन्हें प्रणाम किया। देवराज इंद्र आगे बढ़े और बोले, "शौर्य, तुम्हारे भीतर महादेव की शक्ति का अंश है। धर्म की रक्षा के लिए देवता सदैव तुम्हारे साथ रहेंगे।" इतना कहते ही आकाश से हजारों दिव्य योद्धा प्रकट होने लगे। उनके हाथों में दिव्य अस्त्र थे और उनकी आँखों में तेज चमक रहा था। देवताओं ने अपनी दिव्य सेना शौर्य को सौंप दी। उसकी शक्ति पहले से कई गुना बढ़ चुकी थी। दूसरी ओर राजीव अपनी अंधकारमय गुफा में बैठा ध्यान कर रहा था। उसके चारों ओर काली अग्नि जल रही थी और दीवारों पर विचित्र तांत्रिक चिह्न बने हुए थे। अचानक उसकी आँखें खुलीं। उसने अपनी शक्तियों से दूर खड़े शौर्य और देवसेना को देख लिया। उसके होंठों पर एक क्रूर मुस्कान उभरी। वह जोर-जोर से हँसने लगा। तो आखिरकार धर्मयोद्धा स्वयं मेरे पास आ रहा है। उसकी आवाज पूरी गुफा में गूँज उठी। तांत्रिक उसके पास खड़ा था। उसने भी उस दिव्य ऊर्जा को महसूस कर लिया था। लेकिन उसके मन में भय था। उसे एहसास हो चुका था कि यह युद्ध अब साधारण नहीं रहा। राजीव धीरे-धीरे खड़ा हुआ और बोला, "आज धर्म और अधर्म का अंतिम निर्णय होगा।

युद्धभूमि तैयार थी। एक ओर देवताओं की विशाल सेना खड़ी थी और दूसरी ओर राजीव की काली सेना। आसमान काले बादलों से ढका हुआ था। बिजली लगातार चमक रही थी। हवा में रक्त और मृत्यु की गंध घुल चुकी थी। शौर्य आगे बढ़ा। उसके हाथ में तलवार थी और आँखों में चमक। दूसरी ओर राजीव खड़ा था। उसके शरीर से काली ऊर्जा निकल रही थी। उसने शौर्य को देखकर कहा, "तो तुम स्वयं अपनी मृत्यु को मेरे पास लेकर आए हो?" उसके पीछे खड़ी काली सेना जोर-जोर से गर्जना करने लगी।

राजीव ने अपनी सेना की एक छोटी टोली को आदेश दिया, "जाओ... इसे पकड़कर मेरे सामने लाओ।" अगले ही क्षण दर्जनों काले सैनिक शौर्य की ओर दौड़े।

शौर्य शांत खड़ा रहा। जैसे ही वे सैनिक उसके करीब पहुँचे, उसने भगवान शिव द्वारा दी गई चंद्रशिला को प्रकट कर दिया। अचानक उसके चारों ओर दिव्य प्रकाश फैल गया। पल भर में पूरी टोली जमीन पर गिर चुकी थी। उनके अस्त्र टूट गए थे और उनके शरीर जलने लगे थे। यह देखकर तांत्रिक की आँखें फैल गईं। वह काँपते हुए बोला, "यह… यह महादेव का अस्त्र है…" उसने तुरंत राजीव की ओर देखा। "इसे शिव ने इस महा युद्ध के लिए अपना दिव्य अस्त्र दिया हो गया। लेकिन राजीव केवल मुस्कुराया। "फिर भी यह मुझे नहीं मार सकता। मेरे पास ब्रह्मांड का सबसे शक्तिशाली अस्त्र है।

उसी समय शौर्य ने अपनी सेना को आगे बढ़ने का संकेत दिया। देवसेना गर्जना करती हुई काली सेना पर टूट पड़ी। तलवारों की टकराहट, मंत्रों की गूँज और चीखों से पूरा वातावरण काँप उठा। दोनों सेनाओं के बीच भयंकर युद्ध छिड़ गया। शौर्य स्वयं सेना का नेतृत्व कर रहा था। उसकी तलवार बिजली की गति से चल रही थी। जहाँ उसका वार पड़ता, वहाँ काली सेना के सैनिक धराशायी हो जाते। देवसेना भी पूरी शक्ति से लड़ रही थी। धीरे-धीरे काली सेना पीछे हटने लगी। उसी समय तांत्रिक युद्धभूमि में उतरा। उसकी आँखों में क्रूरता थी। उसने अपने हाथ आसमान की ओर उठाए और मंत्रों का उच्चारण शुरू किया। अचानक चारों ओर काला धुआँ फैल गया। पूरा वातावरण अंधकार से भर गया। शौर्य ने महसूस किया कि उसके आसपास सब कुछ बदलने लगा है। वह माया-जाल में फँस चुका था। उसे दिखाई देने लगा कि उसके माता-पिता उस के सामने हैं। पूरा संसार नष्ट हो चुका है। एक पल के लिए उसका मन विचलित हुआ। लेकिन अगले ही क्षण उसे भगवान परशुराम की शिक्षा याद आई। उसने अपनी आँखें बंद कीं और अपनी आत्मा की शक्ति को महसूस किया। अचानक उसके भीतर से तेज प्रकाश निकला। वह प्रकाश इतना प्रबल था कि तांत्रिक का माया-जाल टूट गया। तांत्रिक पीछे हट गया। इससे पहले कि वह

कुछ कर पाता, शौर्य उसकी ओर बिजली की गति से बढ़ा और अपनी तलवार से प्रहार किया। तांत्रिक दूर जाकर गिरा।

लेकिन वह अभी पराजित नहीं हुआ था। उसने तुरंत मंत्र पढ़े और एक विशाल दानव को प्रकट कर दिया। वह दानव गर्जना करता हुआ शौर्य पर टूट पड़ा। उसकी आँखें लाल थीं और उसके शरीर से धुआँ निकल रहा था। लेकिन शौर्य बिना डरे उसके सामने खड़ा रहा। दानव ने अपने विशाल हाथ से शौर्य पर प्रहार किया लेकिन शौर्य ने छलांग लगाकर उसके वार से बचते हुए अपनी चंद्रशिला सक्रिय कर दी। अगले ही क्षण एक तेज प्रकाश निकला और वह दानव जलने लगा। उसकी भयानक चीखें पूरे युद्धक्षेत्र में गूँज उठीं। कुछ ही पलों में वह राख बनकर बिखर गया। तांत्रिक यह देखकर भयभीत हो उठा। उसे समझ आ चुका था कि शौर्य अब पहले वाला साधारण बालक नहीं रहा। मौका पाकर वह युद्धभूमि से भाग निकला।

शौर्य ने चारों ओर देखा। युद्ध अब भी जारी था। लेकिन उसी क्षण उसे भगवान शिव की कही बात याद आई। "यदि मां काली को मुक्त नहीं किया गया... तो यह युद्ध कभी समाप्त नहीं होगा।" शौर्य तुरंत युद्धभूमि छोड़कर उस गुफा की ओर बढ़ा जहाँ मां काली को तांत्रिक शक्तियों से बाँधकर रखा गया था। रास्ते में उसे अंधकार की विचित्र ऊर्जा महसूस हो रही थी। जैसे-जैसे वह गुफा के करीब पहुँच रहा था, वातावरण और भारी होता जा रहा था। गुफा के भीतर घना अंधकार था। दीवारों पर रक्त से बने तांत्रिक चिह्न चमक रहे थे। बीच में मां काली का दिव्य स्वरूप बंधनों में जकड़ा हुआ था। उनके चारों ओर काली ऊर्जा घूम रही थी। शौर्य धीरे-धीरे आगे बढ़ा। तभी मां काली की आवाज गूँजी, "रुको शौर्य... यह बंधन साधारण नहीं है। इसे तोड़ने में तुम्हारे प्राण भी जा सकते हैं।" शौर्य ने उनकी ओर देखा। उसके चेहरे पर भय नहीं था। उसने शांत स्वर में कहा, "यदि धर्म की रक्षा के लिए मेरे प्राण भी चले जाएँ... तो वह मेरे लिए सौभाग्य होगा।" इतना कहकर उसने अपनी तलवार निकाली और पूरे

बल से उस तांत्रिक बंधन पर प्रहार कर दिया। अगले ही क्षण भयंकर विस्फोट हुआ। पूरी गुफा काँप उठी। चट्टानें टूटने लगीं। शौर्य दूर जाकर गिरा। उसके शरीर से रक्त बहने लगा। लेकिन उसी क्षण मां काली के बंधन टूट चुके थे। पूरी गुफा दिव्य प्रकाश से भर गई। काली ऊर्जा नष्ट होने लगी। इसी समय राजीव और तांत्रिक वहाँ पहुँच गए। मां काली को मुक्त देखकर राजीव का चेहरा क्रोध से भर उठा। उसकी आँखें पूरी तरह काली हो चुकी थीं। उसने घायल शौर्य की ओर देखा और अपनी शक्तियाँ प्रयोग करने के लिए हाथ उठाया।

लेकिन उसी क्षण मां काली उसके सामने आ खड़ी हुईं। उनकी आँखों में ऐसा क्रोध था कि स्वयं तांत्रिक भी काँप उठा। मां काली की आवाज पूरी गुफा में गूँज उठी। "यदि तुमने इस पर शक्ति का प्रयोग किया... तो मैं अभी तुम्हारा अंत कर दूँगी।" राजीव कुछ क्षण के लिए रुक गया। उसके भीतर पहली बार भय पैदा हुआ। मां काली आगे बोलीं, "तुम्हारी मृत्यु शौर्य के हाथों लिखी जा चुकी है।" यह सुनते ही राजीव की मुट्ठियाँ भींच गईं। उसका क्रोध चरम सीमा पर पहुँच चुका था लेकिन वह मां काली के सामने कुछ नहीं कर सका। अगले ही क्षण मां काली घायल शौर्य को अपने साथ वहाँ से ले गईं। दूसरी ओर भगवान परशुराम उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। जब उन्होंने शौर्य को घायल अवस्था में देखा तो उनकी आँखों में चिंता उतर आई। उन्होंने तुरंत अपनी दिव्य शक्तियों से उसके घाव भरने शुरू किए। धीरे-धीरे शौर्य की साँसें सामान्य होने लगीं।

कुछ समय बाद शौर्य ने अपनी आँखें खोलीं। उसके सामने मां काली खड़ी थीं। उनका स्वर अब शांत था। उन्होंने शौर्य के सिर पर हाथ रखा और कहा, "धर्म के इस युद्ध में जब भी तुम्हें मेरी आवश्यकता होगी... मेरा स्मरण करना। मैं स्वयं तुम्हारे पास आ जाऊँगी।" यह सुनकर शौर्य की आँखों में नई शक्ति जाग उठी। मां काली अंतर्ध्यान हो गईं। भगवान परशुराम शौर्य की ओर देखते हुए बोले, "आज तुमने केवल मां काली को मुक्त नहीं किया... बल्कि धर्म की

आशा को भी जीवित रखा है।" शौर्य धीरे-धीरे उठकर बैठ गया। उसके शरीर में दर्द था लेकिन उसकी आत्मा पहले से अधिक शक्तिशाली महसूस हो रही थी।

दूसरी ओर राजीव का क्रोध अब पागलपन में बदल रहा था। उसने अपनी गुफा की दीवारों पर प्रहार करना शुरू कर दिया। चारों ओर चट्टानें टूटने लगीं। तांत्रिक भयभीत होकर एक कोने में खड़ा था। राजीव गरजते हुए बोला, "शौर्य... अब मैं तुम्हें जीवित नहीं छोड़ूँगा।" तांत्रिक काँपते हुए बोला, "लेकिन मां काली अब उसके साथ हैं..." राजीव की आँखों में आग जल उठी। "तो क्या हुआ? मेरे पास अब भी वह शक्ति है जो पूरे संसार को नष्ट कर सकती है।" उसकी आवाज में ऐसा पागलपन था कि तांत्रिक भी डर गया। महेंद्र पर्वत पर रात गहरी हो चुकी थी। शौर्य अकेला बैठा आकाश की ओर देख रहा था। उसके मन में अनेक विचार चल रहे थे। उसने पहली बार महसूस किया कि यह युद्ध केवल अस्त्रों का नहीं बल्कि विश्वास और आत्मा का भी है। भगवान परशुराम उसके पास आए और बोले, "अब तुम्हारी अगली परीक्षा शुरू होगी।"

शौर्य ने उनकी ओर देखा। "क्या अभी और भी कुछ बाकी है गुरुदेव?" परशुराम गंभीर स्वर में बोले, "राजीव अब पहले से अधिक खतरनाक हो चुका है। उसका अहंकार उसे विनाश की ओर ले जा रहा है। और अहंकार में डूबा हुआ व्यक्ति सबसे अधिक विनाशकारी होता है।" उसी समय दूर आसमान में काले बादल फिर से इकट्ठा होने लगे। बिजली लगातार चमक रही थी। ऐसा लग रहा था मानो प्रकृति स्वयं आने वाले युद्ध की चेतावनी दे रही हो। शौर्य ने अपनी तलवार को कसकर पकड़ लिया। अब उसके भीतर किसी प्रकार का भय नहीं बचा था। दूसरी ओर राजीव ने अपनी साधना फिर से शुरू कर दी थी। उसकी गुफा के भीतर काली अग्नि और भी प्रबल हो चुकी थी। वह अब ऐसी शक्ति प्राप्त करना चाहता था जो स्वयं देवताओं को भी चुनौती दे सके। तांत्रिक समझ चुका था कि राजीव धीरे-धीरे अपनी ही शक्तियों का गुलाम बनता जा रहा है।

भगवान परशुराम पर्वत की चोटी पर खड़े दूर क्षितिज को देख रहे थे। उन्होंने महसूस कर लिया था कि आने वाला युद्ध पहले से कहीं अधिक भयानक होगा। यह केवल दो व्यक्तियों का युद्ध नहीं रहेगा... बल्कि धर्म और अधर्म के अंतिम संतुलन का निर्णय करेगा।

रात के अंधकार में शौर्य ने अपनी आँखें बंद कीं और महादेव का स्मरण किया। उसके भीतर अब एक नई दृढ़ता जन्म ले चुकी थी। मां काली का आशीर्वाद, देवताओं की शक्ति और भगवान परशुराम की शिक्षा अब उसके साथ थी। लेकिन दूसरी ओर राजीव भी अपने विनाशकारी मार्ग पर आगे बढ़ चुका था। दोनों की राहें अब एक अंतिम महायुद्ध की ओर बढ़ रही थीं... जहाँ केवल एक ही शक्ति विजयी होने वाली थी।

९

अंतिम युद्ध

अंतिम युद्ध की घड़ी आ चुकी थी। आकाश पर काले बादल चारों ओर छा चुके थे और काला द्वार अपनी पूर्ण शक्ति के साथ खुल चुका था। उसके भीतर से निकलने वाली अंधकारमय ऊर्जा पूरे वातावरण को निगल रही थी। युद्धभूमि के मध्य खड़ा राजीव अब पहले जैसा नहीं रहा था। उसकी आँखों में शक्ति का अहंकार और क्रोध साफ दिखाई दे रहा था। जब से माँ काली उसके बंधन से मुक्त हुई थीं, उसका क्रोध और भी बढ़ गया था। दूसरी ओर शौर्य शांत भाव से खड़ा था। वर्षों की साधना, भगवान परशुराम की शिक्षा और महादेव के आशीर्वाद ने उसे एक धर्मयोद्धा बना दिया था। उसके पास देवताओं के अस्त्र थे और भगवान शिव द्वारा दी गई चंद्रशिला। आज केवल दो योद्धा नहीं, बल्कि धर्म और अधर्म आमने-सामने खड़े थे।

कुछ ही क्षणों बाद दोनों सेनाओं को युद्ध आरंभ करने का संकेत मिल गया। काली सेना गर्जना करती हुई आगे बढ़ी तो देव सेना ने भी पूरे बल के साथ उनका सामना किया। तलवारों की टक्कर से चिंगारियाँ निकलने लगीं। चारों ओर युद्ध का शोर गूँज उठा। कहीं दिव्य अस्त्रों का प्रकाश चमक रहा था तो कहीं काली शक्तियों का अंधकार फैल रहा था। देवता, गंधर्व और ऋषि आकाश से इस युद्ध को देख रहे थे। हर किसी को पता था कि यह केवल एक युद्ध नहीं, बल्कि युगों के भविष्य का निर्णय था।

इसी भीषण संघर्ष के बीच तांत्रिक आगे बढ़ा। उसके मन में कुछ और चल रहा था। तभी तांत्रिक ने सीधे शौर्य को चुनौती दी और दोनों एक-दूसरे के सामने आ खड़े हुए। तांत्रिक कोई साधारण साधक नहीं था। वर्षों की काली साधना ने उसे अत्यंत शक्तिशाली बना दिया था। उसने अपने मंत्रों से पर प्रहार कर दिया और अग्नि की भयानक लपटें शौर्य की ओर भेज दीं।

लेकिन शौर्य ने अपने दिव्य अस्त्रों से उन सभी आक्रमणों को विफल कर दिया। दोनों के बीच शक्तियों का ऐसा युद्ध आरंभ हुआ कि धरती काँप उठी। तांत्रिक कभी भ्रम पैदा करता तो कभी अंधकार की दीवार खड़ी कर देता। लेकिन शौर्य हर बार धैर्य और बुद्धि से उसका सामना करता रहा। युद्ध धीरे-धीरे और भी

भयंकर होता गया। दोनों योद्धा अपनी पूरी शक्ति झोंक चुके थे और कोई भी पीछे हटने को तैयार नहीं था।

तांत्रिक ने अपनी सबसे शक्तिशाली साधना का प्रयोग किया। उसके चारों ओर काली ऊर्जा का विशाल चक्र घूमने लगा। उसने एक साथ अनेक मंत्रों का उच्चारण किया और शौर्य पर घातक प्रहार किया। कुछ क्षणों के लिए पूरा युद्धक्षेत्र अंधकार में डूब गया। लेकिन तभी शौर्य ने अपनी दिव्य तलवार निकाल ली। तलवार से निकलने वाला प्रकाश अंधकार को चीरता हुआ आगे बढ़ा। दोनों के बीच भीषण युद्ध छिड़ गया। प्रत्येक वार में अपार शक्ति थी। अंततः अवसर देखकर शौर्य ने पूरी शक्ति से प्रहार किया। तांत्रिक संतुलन खो बैठा और एक गहरी खाई की ओर जा गिरा। उसका शरीर धुएँ और अग्नि में लुप्त हो गया। सबको लगा कि तांत्रिक का अंत हो चुका है।

तांत्रिक के गिरते ही देव सेना में उत्साह की लहर दौड़ गई। शौर्य ने भी यही समझा कि अधर्म का सबसे बड़ा सेवक अब समाप्त हो चुका है। लेकिन किसी को यह ज्ञात नहीं था कि भाग्य ने उसके लिए कुछ और ही लिखा था। दूसरी ओर राजीव ने जैसे ही यह दृश्य देखा, उसका क्रोध अपने चरम पर पहुँच गया।

उसकी आँखों में प्रतिशोध की ज्वाला जल उठी। उसने भयानक गर्जना की और अपनी पूरी शक्ति के साथ आगे बढ़ा। अब वह किसी और से नहीं, स्वयं शौर्य से युद्ध करना चाहता था। वर्षों से जिसकी भविष्यवाणी की जा रही थी, वह क्षण अंततः आ चुका था।

शौर्य और राजीव युद्धभूमि के मध्य आमने-सामने खड़े थे। चारों ओर का युद्ध जैसे थम गया हो। सभी की निगाहें केवल उन्हीं पर थीं। राजीव के पीछे काले द्वार की शक्ति थी जबकि शौर्य के पीछे धर्म और देवताओं का आशीर्वाद। बिना एक शब्द बोले दोनों ने एक-दूसरे पर पहला प्रहार किया। जैसे ही उनके अस्त्र टकराए, भयंकर विस्फोट हुआ। धरती काँप उठी और आकाश में बिजली चमकने लगी। दोनों योद्धाओं की शक्ति इतनी अधिक थी कि उनके हर वार से ब्रह्मांड हिलने लगा। यह केवल युद्ध नहीं था, बल्कि धर्म और अधर्म का टकराव था।

युद्ध लगातार बढ़ता गया। राजीव अपनी काली शक्तियों का प्रयोग कर रहा था जबकि शौर्य उसका सामना कर रहा था। कभी राजीव भारी पड़ता तो कभी शौर्य। दोनों के शरीर पर अनेक घाव हो चुके थे, लेकिन कोई हार मानने को तैयार नहीं था।

युद्धभूमि के चारों ओर ऊर्जा की लहरें उठ रही थीं। कई बार ऐसा लगा कि धरती इस संघर्ष को सह नहीं पाएगी। देवता भी चिंतित थे, क्योंकि दोनों योद्धा अपनी सीमाओं से आगे बढ़ चुके थे। फिर भी परिणाम किसी एक पक्ष में नहीं जा रहा था।

अचानक राजीव ने निर्णय लिया कि अब समय आ गया है अपने सबसे शक्तिशाली अस्त्र का प्रयोग करने का। उसने काल तंत्रास्त्र को जागृत किया। उसके सक्रिय होते ही पूरा आकाश काला पड़ गया। चारों ओर भयंकर गर्जना होने लगी। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो स्वयं प्रलय उतर आया हो। उस अस्त्र

की शक्ति देखकर देव सेना तक भयभीत हो गई। राजीव के चेहरे पर फिर से अहंकार भरी मुस्कान लौट आई। उसे विश्वास था कि अब कोई उसे पराजित नहीं कर सकता। राजीव के काल तंत्रास्त्र के उत्तर में शौर्य ने चंद्रशिला को जागृत किया। जैसे ही उसने उसे अपने हाथ में लिया, उसके चारों ओर दिव्य प्रकाश फैल गया। महादेव की शक्ति उसके भीतर प्रवाहित होने लगी। उसका शरीर ऊर्जा से भर उठा।

चंद्रशिला से निकलने वाला प्रकाश अंधकार को पीछे धकेलने लगा। कुछ ही क्षणों में युद्धभूमि दो भागों में बँट गई। एक ओर अंधकार का समुद्र था और दूसरी ओर दिव्य प्रकाश। दोनों शक्तियाँ बार-बार टकरा रही थीं और प्रत्येक टकराव से पूरा ब्रह्मांड काँप उठता था। युद्ध कई घंटों तक चलता रहा। दोनों घायल हो चुके थे। दोनों ने अपनी सीमाएँ पार कर दी थीं। तभी शौर्य की दृष्टि काले द्वार पर गई। उसे समझ आया कि राजीव की अधिकांश शक्ति उसी द्वार से आ रही है। यदि उस द्वार को रोका जाए तो राजीव कमजोर हो सकता है। लेकिन समस्या यह थी कि काला द्वार नष्ट नहीं किया जा सकता था। तभी उसे भगवान परशुराम द्वारा दी गई दिव्य जंजीर याद आई। वही जंजीर जिसने कभी मायासुर के द्वार को बंद किया था। उसके मन में आशा की एक किरण जाग उठी।

शौर्य तेजी से काले द्वार की ओर बढ़ा। राजीव उसे रोकने के लिए पीछे दौड़ा, लेकिन शौर्य ने पूरी शक्ति से उस पर प्रहार कर दिया। कुछ क्षणों के लिए राजीव पीछे हट गया। उसी अवसर का लाभ उठाकर शौर्य ने परशुराम के मंत्रों का उच्चारण किया। दिव्य जंजीर चमकने लगी और काले द्वार की ओर बढ़ी। धीरे-धीरे उसने उस विशाल द्वार को जकड़ लिया। द्वार पूरी तरह बंद तो नहीं हुआ।

लेकिन उसकी शक्ति कुछ समय के लिए रुक गई। राजीव अचानक स्वयं को कमजोर महसूस करने लगा। इसी क्षण राजीव को माँ काली के शब्द याद आए।

उन्होंने कहा था, “जिस दिन मैं तुम्हारे बंधन से मुक्त हो जाऊँगी, जो मुझे मुक्त करेगा वही तुम्हारा काल बनेगा।” कुछ पल के लिए राजीव ने शौर्य में अपना विनाश देख लिया। लेकिन उसका अहंकार अभी भी जीवित था। उसने अपनी बची हुई सारी शक्ति एकत्रित की और अंतिम प्रहार के लिए आगे बढ़ा। शौर्य ने भी अपने भीतर की सम्पूर्ण दिव्य ऊर्जा को जागृत कर लिया। दोनों जानते थे कि अब अगला वार ही इस युद्ध का परिणाम तय करेगा।

दोनों योद्धाओं ने एक साथ अपना अंतिम प्रहार किया। उनकी शक्तियाँ आपस में टकराईं और ऐसा विस्फोट हुआ कि पूरा युद्धक्षेत्र प्रकाश और ऊर्जा से भर गया। कुछ क्षणों तक किसी को कुछ दिखाई नहीं दिया। धरती काँप उठी। पर्वतों में दरारें पड़ गईं। आकाश में फैले काले बादल बिखरने लगे। जब प्रकाश धीरे-धीरे कम हुआ तो सभी की निगाहें युद्धभूमि के मध्य पहुँचीं। वहाँ राजीव भूमि पर गिरा पड़ा था। उसकी शक्ति समाप्त हो चुकी थी।

राजीव की पराजय के साथ ही उसकी काली सेना का मनोबल टूट गया। जो सैनिक अभी तक गर्व से लड़ रहे थे, वे भयभीत होकर भागने लगे। उसी समय काला द्वार भी धीरे-धीरे विलीन होने लगा। वर्षों बाद पहली बार आकाश में सूर्य की किरणें दिखाई दीं। लोगों के चेहरों पर आशा लौट आई। देव सेना ने विजय का उद्घोष किया। ऋषियों और देवताओं ने शौर्य को आशीर्वाद दिया। ऐसा लग रहा था कि अधर्म का अंत हो चुका है और संसार को उसका रक्षक मिल गया है।

सभी को लगा कि कहानी यहीं समाप्त हो गई है। धर्म की विजय हो चुकी थी और अंधकार पराजित हो चुका था। लेकिन संसार की दृष्टि से बहुत दूर, एक गहरी खाई के भीतर एक घायल व्यक्ति धीरे-धीरे उठ रहा था। वह तांत्रिक था। उसका शरीर घायल था, लेकिन उसकी आँखों में अब बदले की भावना थी। उसके होंठों पर एक हल्की मुस्कान उभरी। उसने अंधकार की ओर देखते हुए

कहा, "यह अंत नहीं है... अभी बहुत कुछ शेष है।" दूर कहीं फिर से काली ऊर्जा की एक सूक्ष्म लहर उठी। संसार उत्सव मना रहा था, लेकिन अंधकार एक बार फिर लौटने की तैयारी कर रहा था। एक नए युद्ध की शुरुआत हो चुकी थी।

तांत्रिक धीरे-धीरे खाई के भीतर उठ खड़ा हुआ। उसका शरीर गंभीर रूप से घायल था। उसकी काली साधना का अधिकांश भाग नष्ट हो चुका था, लेकिन उसकी आँखों में अभी भी पराजय का कोई चिन्ह नहीं था। उसने ऊपर आकाश की ओर देखा जहाँ वर्षों बाद सूर्य का प्रकाश दिखाई दे रहा था। कुछ क्षणों के लिए उसके चेहरे पर क्रोध उभरा, लेकिन फिर वह मुस्कुरा दिया। उसे पता था कि राजीव हार चुका है, परंतु वह यह भी जानता था कि काली शक्तियों का स्रोत केवल राजीव नहीं था। अंधकार उससे कहीं अधिक विशाल था जितना संसार समझता था।

उधर युद्धभूमि में शौर्य का विजय उत्सव मनाया जा रहा था। देवताओं ने उसे आशीर्वाद दिया और देव सेना उसका जयघोष कर रही थी। लेकिन शौर्य के मन को शांति नहीं मिल रही थी। उसे ऐसा लग रहा था मानो कोई अदृश्य शक्ति अब भी संसार पर निगाह रखे हुए हो। उसी रात जब वह ध्यान में बैठा, उसे एक विचित्र दृश्य दिखाई दिया। उसने देखा कि अंधकार के बीच एक विशाल सिंहासन रखा हुआ है और उसके सामने कोई रहस्यमयी आकृति खड़ी है। वह आकृति धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ी, लेकिन उससे पहले ही ध्यान टूट गया। शौर्य समझ गया कि खतरा अभी पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है।

कुछ दिनों बाद भगवान परशुराम पुनः शौर्य के पास आए। उनके चेहरे पर चिंता थी। उन्होंने बताया कि काला द्वार तो बंद हो चुका है, लेकिन उसकी ऊर्जा पूरी तरह नष्ट नहीं हुई। ब्रह्मांड के कई हिस्सों में उसके अवशेष अब भी मौजूद हैं। यदि कोई शक्तिशाली साधक उन्हें एकत्र कर ले, तो पहले से भी अधिक

भयानक शक्ति जन्म ले सकती है। यह सुनकर शौर्य गंभीर हो गया। उसने समझ लिया कि उसकी विजय केवल एक चरण थी, अंतिम अंत नहीं।

उसी समय दूर अज्ञात प्रदेश में तांत्रिक एक प्राचीन गुफा तक पहुँच चुका था। वह स्थान हजारों वर्षों से संसार की दृष्टि से छिपा हुआ था। गुफा के भीतर अनेक रहस्यमयी चिन्ह बने हुए थे। उसके केंद्र में एक विशाल पत्थर था जिसके भीतर काली ऊर्जा बंद थी। तांत्रिक ने अपने रक्त से एक मंत्रचक्र बनाया और साधना प्रारंभ कर दी। जैसे-जैसे मंत्रों का प्रभाव बढ़ा, पत्थर के भीतर की ऊर्जा जागृत होने लगी। अचानक गुफा में एक गूँजती हुई आवाज सुनाई दी, "क्या तुम मुझे मुक्त करने आए हो?" तांत्रिक के चेहरे पर मुस्कान फैल गई।

दूसरी ओर शौर्य महेंद्र पर्वत की ऊँचाइयों पर खड़ा दूर क्षितिज को देख रहा था। संसार में शांति लौट रही थी, लेकिन उसके हृदय में एक अनजाना संकेत बार-बार जन्म ले रहा था। उसे महसूस हो रहा था कि भविष्य में उससे भी बड़ा युद्ध उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। उसी क्षण आकाश में एक तेज प्रकाश प्रकट हुआ और फिर अचानक बुझ गया। शौर्य ने अपनी मुट्ठी कस ली। उसे समझ आ गया कि धर्म की रक्षा का उसका मार्ग अभी समाप्त नहीं हुआ है। कहीं अंधकार फिर से जाग रहा था, और इस बार उसका स्वरूप पहले से भी अधिक भयानक होने वाला था। एक नई कथा, एक नए शत्रु और एक नए महायुद्ध की शुरुआत हो चुकी थी।

10

तांत्रिक की वापसी

शौर्य ने जब अपनी दिव्य शक्तियों से राजीव का अंत कर धर्म की पुनर्स्थापना की, तब वर्षों से फैला अंधकार समाप्त हो गया। युद्धभूमि पर शांति लौट आई। आकाश में सूर्य का प्रकाश फिर से चमकने लगा और लोगों के चेहरों पर आशा वापस आ गई। देवताओं ने प्रसन्न होकर पुष्प वर्षा की। भगवान परशुराम भी संतुष्ट थे, क्योंकि उनका शिष्य अपने धर्म का पालन करते हुए अधर्म का विनाश कर चुका था। लेकिन शौर्य जानता था कि केवल शक्ति प्राप्त कर लेना पर्याप्त नहीं होता। यदि उस शक्ति पर नियंत्रण न हो, तो वही शक्ति विनाश का कारण बन सकती है। इसी विचार के साथ उसने संसार से कुछ समय के लिए दूर जाने का निर्णय लिया।

कुछ समय बाद शौर्य कैलाश पर्वत की ओर निकल पड़ा। बर्फ से ढकी विशाल चोटियाँ और चारों ओर फैली दिव्यता उसके मन को शांति प्रदान कर रही थीं। वहीं दूसरी ओर भगवान परशुराम भी गहन ध्यान में लीन थे। कैलाश की शीतल वायु बह रही थी,

परंतु शौर्य का ध्यान अडिग था।

वह अपने भीतर जागृत हुई दिव्य शक्तियों को समझने और उन पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त करने का प्रयास कर रहा था। दिन बीतते गए और उसकी साधना और भी गहरी होती चली गई। उसे लगने लगा कि अब संसार में कोई बड़ा संकट शेष

नहीं है। लेकिन नियति कुछ और ही लिख चुकी थी। एक रात अचानक कैलाश का शांत वातावरण विचित्र हो उठा। दूर कहीं से एक भयावह हँसी की गूँज सुनाई दी। वह साधारण हँसी नहीं थी। उसमें घृणा, प्रतिशोध और विनाश की झलक थी। उसकी ध्वनि सुनते ही शौर्य की आँखें खुल गईं।

उसी क्षण भगवान परशुराम ने भी अपना ध्यान भंग कर दिया। दोनों ने उस ऊर्जा को महसूस किया। वह ऊर्जा उन्हें जानी-पहचानी लगी। कुछ पल बाद शौर्य के मन में एक नाम कौंधा। तांत्रिक। लेकिन यह कैसे संभव था? वह तो युद्ध में खाई में गिरकर नष्ट हो चुका था। फिर यह शक्ति कहाँ से आ रही थी? वास्तव में तांत्रिक मरा नहीं था। शौर्य के प्रहार ने उसे गंभीर रूप से घायल अवश्य कर दिया था, लेकिन उसका अंत नहीं हुआ था। खाई की अथाह गहराइयों में गिरने के बाद भी उसने अपनी चेतना बचा ली थी। कई दिनों तक वह अंधकार में पड़ा रहा। धीरे-धीरे उसने अपनी तांत्रिक शक्तियों की सहायता से स्वयं को पुनर्जीवित किया। जब वह पूर्ण रूप से स्वस्थ हुआ तो उसके भीतर केवल एक ही भावना बची थी, प्रतिशोध। वह जानता था कि राजीव की मृत्यु के साथ उसका सबसे शक्तिशाली सहयोगी समाप्त हो चुका है, लेकिन वह यह भी जानता था कि अंधकार का स्रोत अभी पूरी तरह नष्ट नहीं हुआ है।

तांत्रिक ने अपनी साधना के माध्यम से राजीव के सबसे शक्तिशाली अस्त्र काल तंत्रास्त्र को खोज निकाला। अंतिम युद्ध में वह अस्त्र टूट चुका था, लेकिन उसके भीतर की काली ऊर्जा अभी भी जीवित थी। जब तांत्रिक ने उसे अपने हाथों में उठाया तो उसे उसके भीतर अपार शक्ति का अनुभव हुआ। उसने समझ लिया कि यदि इस अस्त्र को फिर से जागृत कर दिया जाए, तो वह पहले से भी अधिक विनाशकारी बन सकता है। इसी उद्देश्य से वह एक प्राचीन और रहस्यमयी गुफा तक पहुँचा, जिसका रहस्य हजारों वर्षों से छिपा हुआ था।

गुफा के भीतर पहुँचते ही तांत्रिक ने शक्तिशाली मंत्रों का उच्चारण करना शुरू कर दिया।

देखते ही देखते पूरी गुफा अभेद्य तांत्रिक कवच से घिर गई। अब कोई देवता, ऋषि या साधक उसके कार्य में बाधा नहीं डाल सकता था। उसने काल तंत्रास्त्र को गुफा के मध्य स्थापित किया और उसके चारों ओर एक विशाल यंत्र रचना प्रारंभ कर दी। लेकिन उसका लक्ष्य केवल अस्त्र को पुनर्जीवित करना नहीं था। वह ऐसा कार्य करना चाहता था जिसके बारे में आज तक किसी ने सोचा भी नहीं था। उसका उद्देश्य था काले लोक और इस संसार के बीच का मार्ग खोलना। तांत्रिक का विश्वास था कि यदि काले लोक की असीम ऊर्जा को इस संसार में लाया जाए, तो काल तंत्रास्त्र अजेय बन जाएगा। उसने एक भयानक यज्ञ की तैयारी शुरू कर दी। गुफा के भीतर अग्नि प्रज्वलित हुई और मंत्रों की गूँज चारों ओर फैलने लगी। जैसे-जैसे यज्ञ आगे बढ़ा, गुफा का वातावरण बदलने लगा। दीवारों पर विचित्र छायाएँ उभरने लगीं। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो स्वयं अंधकार जीवित होकर उसके आदेशों का पालन कर रहा हो। धीरे-धीरे दोनों लोकों के बीच का पर्दा कमजोर होने लगा।

तांत्रिक के चेहरे पर संतोष की मुस्कान फैल गई। उसी समय कैलाश पर्वत पर ध्यानमग्न शौर्य को एक भयंकर कंपन का अनुभव हुआ। उसकी बंद आँखों के सामने अंधकार की झलक उभरी। उसने देखा कि कहीं दूर कोई प्राचीन शक्ति पुनः जागृत हो रही है। भगवान परशुराम ने भी उसी अशुभ संकेत को महसूस किया। दोनों ने एक-दूसरे की ओर देखा और बिना कुछ कहे सब समझ गए। युद्ध समाप्त नहीं हुआ था। राजीव की हार केवल एक अध्याय का अंत थी। असली संकट अब जन्म ले रहा था। कहीं दूर तांत्रिक अपनी योजना में सफल होने के करीब पहुँच चुका था। अंधकार ने एक बार फिर करवट ले ली थी, और इस बार आने वाला महायुद्ध पहले से कहीं अधिक भयानक होने वाला था।